पहला अध्याय

समकालीनता और उदय प्रकाश

पहला अध्याय
समकालीनता और उदय प्रकाश

समकालीन परिवेश हमारी समग्र चेतना का परिवेश है। साथ ही साथ देश की उन्नति एवं अवनति के बीच त्रस्त आम आदमी का परिवेश भी है। इस विडम्बनापूर्ण परिवेश को समग्र रूप से जानने के लिए समकालीन साहित्य को अपने कब्जे में पकडना चाहिए। क्योंकि समय की सच्चाई को जानने एवं समस्या के प्रति प्रतिरोध ज़ाहिर करने की क्षमता साहित्य में है। समकालीन साहित्य एवं साहित्य की प्रतिरोधी चेतना पर विचार करने के पहले समकालीनता पर विचार करना अधिक समीचीन होगा। आगे इसकी चर्चा की जाएगी।

1.1 समकालीनता का अर्थ

समकालीन शब्द अंग्रेज़ी के कांटेंपररी (contemporary) के रूप में हिन्दी में प्रचलित है। वास्तव में कांटेंपररी शब्द काल विशेष से संबद्ध, व्यक्ति विशेष के कालयापन से संबद्ध, साहित्य, समाज एवं प्रवृत्ति विशेष से संशिष्ट कालखण्ड आदि अर्थों में प्रयुक्त होता है। सूक्ष्म दृष्टि से देखा जाय तो इन तीनों अर्थों में समय सापेक्षिकता की ध्वनि मुखरित होती है। इसके तहत हम कह सकते हैं कि रचना में समय की माँग होती है। मानक हिन्दी कोश में "जो उसी काल या समय में जीवित अथवा वर्तमान रहा हो, जिसमें कुछ और विशिष्ट लोग भी रहे हैं।

एक ही समय में रहनेवाले जैसे महाराणा प्रताप अकबर के समकालीन थे। जो उत्पत्ति, स्थिति आदि के विचार से ही एक समय में हुए हो (कांटेंपोरेरी)"[1]

1.2 परिभाषा

समकालीनता रचनाकार का आधुनिक चेहरा मात्र नहीं, वहाँ समाज के प्रति प्रतिबद्धता एवं आत्ममंथन का भी स्थान है। दूसरे शब्दों में कहा जाये तो अपने समय के प्रति ईमानदार होना भी रचनाकार का शर्त ही है।

समकालीनता संबन्धी विभिन्न विचारों को नीचे दिया जा रहा है-

अंग्रेज़ी हिन्दी कोश में समकालीनता का अर्थ - "एक ही समय का, अपने समय का, समवयस्क होता है।"[2]

हमें पता है 'समकालीन' संकल्पना सुनिश्चित तो नहीं, लेकिन व्यक्ति एवं कृति के समकालीन को ढूँढने के लिए तत्कालीन परिवेश को जानना चाहिए। इस नज़रिये से देखा जाये तो समकालीनता को निश्चित करना आसान हो जायेग। डॉ. पुष्पपाल सिंह का वक्तव्य इस का समर्थन करता है - "आज 1960ई के बाद के साहित्य के लिए 'समकालीन' संज्ञा प्रचलन में आ चुकी है। वह केवल आन्दोलनबद्ध दृष्टि से स्वीकार नहीं की जा सकती है। आधुनिक नवलेखन के संदर्भ में इन शब्दों को आधुनिकता के समानधर्मी के रूप में स्थापित करने की चेष्टा हुई है। किन्तु

---

1. रामचन्द्र वर्मा - मानक हिन्दी कोश - पृ. 278
2. डॉ. कामिल बुल्के - अंग्रेज़ी हिन्दी कोश - पृ. 134

इसमें वह अर्थ-विस्तृति नहीं आ पाई जो 'आधुनिकता' में है। हम समकालीन को कालपरक मानते हुए 1962ई के पश्चात समस्त साहित्य-सृजन के लिए उसका प्रयोग कर सकते हैं।"[1] हमें पता चलता है कि उन्होंने समय या काल को महत्व दिया है। समकालीन शब्द का अर्थ क्या है? इस पर विचार करने से हमें मालूम हो जाता है कि इसका अर्थ यह है कि एक ही समय में रहनेवाले या अपने समय से संबद्ध एक जैसे आशय ग्रहण करने वाले है।

समकालीन एवं समकालीनता दोनों शब्दों में विचार करते हुए मृदुल जोशी लिखते हैं - "समकालीन शब्द विशेषण है और समकालीनता भाववाचक संज्ञा है। किसी व्यक्ति के समय या किसी काल-खण्ड में प्रचलित या व्याप्त प्रवृत्तियों या स्थितियों को उस व्यक्ति के समकालीन माना जा सकता और इन प्रवृत्तियों और स्थितियों को होने का भाव समकालीनता है।"[2]

अरुण कमल के शब्दों में - "आज समकालीनता का अर्थ है पूँजी, बाज़ार, स्वार्थ और अमानवीकरण के विरुद्ध जाग्रता होना। आज मनुष्य बेहद अकेला होता रहा है। पर यह ऐसा अकेलापन है जिसमें एकांत नहीं है। उसकी निजता, स्वायत्तता और स्वाधीनता का उल्लंघन हो रहा है। सामूहिकता में ही वास्तविक एकांत है। आज कविता उसी सामूहिकता और उसी एकांत की खोज है।"[3]

---

1. पुष्पपाल सिंह - समकालीन कहानी युगबोध का संदर्भ - पृ. 84
2. मृदुल जोशी - समकालीन हिन्दी कविता में आम आदमी - पृ. 1
3. अरुण कमल - कविता और समय - पृ. 234

नरेन्द्र मोहन के शब्दों में - "समकालीनता का अर्थ किसी कालखण्ड या दौर में व्याप्त स्थितियों और समस्याओं का चित्रण, निरुपण या बयान भर नहीं है, बल्कि उन्हें ऐतिहासिक अर्थ में समझना, उसके मूल श्रोत तक पहुँचना और निर्णय ले सकने का विवेक अर्जित करना है। समकालीनता एक ठहरी हुई गतिहीन और जड़ स्थिति नहीं है, बल्कि ठहराव, गतिहीनता और जड़ता को सख्ती और निर्ममता से तोड़नेवाली यह गतिमान ऐतिहासिक प्रक्रिया और चेतना है।"[1] यहाँ गतिहीनता एवं जडता तोडने से मतलब यह है कि रचनाकार को अपने परिवेश की स्वीकृति से हटकर उसके प्रतिरोध तो करना चाहिए। परिवर्तन की आकांक्षा करनी चाहिए। डॉ. एन. मोहनन के मुताबिक - "समकालीनता एक अवधारणा है वह एक विचार है। यह समय से भी संबन्धित है मूल्यों से भी।"[2]

डॉ. जयप्रकाश शर्मा समकालीनता को एक काल निरपेक्ष शब्द मानते हुए कहते हैं - "समकालीनता एक कालनिरपेक्ष शब्द है। प्रत्येक युग का साहित्य अपने युग जीवन का साक्षी और समकालीन रहा होगा। इसलिए समकालीनता युग संदर्भ की भावना नहीं हो सकती। समकालीनता का सामान्य अर्थ वर्तमान से अथवा गत दो तीन दशकों से ले तो भी प्रश्न उठता है कि ऐसा कौन सा परिवर्तन चक्र चला कि इस साहित्य को समकालीन की संज्ञा दे दी गई? वास्तव में समकालीन होना समयविहीन होना भी है।"[3]

---

1. नरेन्द्र मोहन - समकालीन हिन्दी कहानी की पहचान (भूमिका) - पृ. 7-8
2. डॉ. सुशील धर्मीणी (सं) - समकालीन भारतीय साहित्य में आधुनिकता बोध - पृ. 121
3. जयप्रकाश शर्मा - समकालीन काव्य दशा और दिशा - पृ. 8

विश्वंभरनाथ उपाध्याय के मुताबिक - "समकालीन एक काल में साथ-साथ जीना नहीं है। समकालीनता अपने काल की समस्याओं और चुनौतियों का मुकाबला करना है। समस्याओं और चुनौतियों में भी केन्द्रीय महत्व रखनेवाली समस्याओं की समझ से समकालीनता उत्पन्न होती है।"[1]

सुवास कुमार के अनुसार - "समय के व्यापक परिप्रेक्ष्य में वर्तमान की बहुआयाम समझ का होना, वर्तमान की समस्याओं का सामाजिक रूप से साक्षात्कार करना, व्यापक जनसमुदाय की आशा, आकांक्षा के प्रति दायित्व और प्रतिबद्धता करना समकालीन बनाना है।"[2]

डॉ. शंभू गुप्त का मत है कि "समकालीनता एक गतिशील और नई से नई उपयोगी और मूल्यवान धारणाओं को ग्रहण करते चलनेवाली एक चिर नवीन अवधारणा है। समकालीनता की स्पष्ट पहचान है कि वह शोषकों, अत्याचारियों और बर्बरों के खूनी आतंक तथा दमन चक्र के खिलाफ प्रतिबद्ध रूप में जनसंघर्षों और मुक्ति अभियानों को अपना संपूर्ण समर्थन दें।"[3]

सुरेश चन्द्र के विचारों में समकालीनता काल सापेक्ष है, वे लिखते हैं - "स्वरूपतः समकालीन काल सापेक्ष है। इसलिए समकालीनता की काल सीमाओं में रहते हुए भी पारिभाषित किया जा सकता है। अतः ऐतिहासिक दृष्टि से मानव

---

1. विश्वंभर नाथ उपाध्याय - समकालीन सिद्धांत और साहित्य - पृ. 16
2. साईनाथ उमाटे - एकान्त श्रीवास्तव की काव्य चेतना - पृ. 13
3. शंभू गुप्त - कहानी, समकालीन चुनौतियाँ - पृ. 54

मूल्य और सामाजिक मान्यताओं में परिवर्तन ला देनेवाली घटनाओं से विलगित कालावधि की सीमा में आनेवाले उन प्रत्ययों को समकालीन कहा जाता है।"[1]

आधुनिकता से प्राप्त संस्कार के रूप में मानते हुए डॉ. चन्द्रशेखर लिखते हैं कि "समकालीनता आधुनिकता से प्राप्त एक संस्कार है, जो आधुनिकता की नयी व्याख्या करता है और आधुनिक बोध के स्तर पर समकालीनता की प्रक्रिया से जन्मता है और उसे एक बोध के रूप में प्रतिपादित भी करता है।"[2]

इन सारे बहुमूल्य विचारों से हमें पता चलता है कि समकालीनता किसी भी परंपरा का रिफ्लक्शन तो नहीं। इसमें वर्तमान की सूचनाएँ हैं। भूतकाल की आलोचना है। भविष्य के लिए निर्देश है। ऐतिहासिक दृष्टि, परिवेशगत बोध एवं सक्रियता से युक्त है समकालीनता। यह तो एक जीवन दृष्टि होने के कारण मूल स्वर भी प्रतिरोध है। समकालीन साहित्य में समकालीनता पर स्पष्ट विचार करते हुए डॉ. परमानंद श्रीवास्तव कहते हैं कि समकालीन साहित्य अयायित अनुभवों का साहित्य नहीं वह हमारे देश, काल या परिस्थितियों की अनिवार्य सृष्टि है। उसमें व्यक्त होनेवाली हताशा या परायापन या अकेलापन भारतीय जीवन स्थिति का ही अंग है।

---

1. डॉ. चन्द्रशेखर - समकालीन हिन्दी नाटक - काव्य चेतना - पृ. 43
2. डॉ. पुष्पपाल सिंह - समकालीन कहानी - नया परिप्रेक्ष्य - पृ. 32

1.3 आधुनिकता

'आधुनिक' शब्द अंग्रेज़ी के 'मार्डन' शब्द के पर्याय के रूप में प्रचलित है। इसका अर्थ है कि सामाजिक संरचना एवं मूल्यों में परिवर्तन या फिर नए मूल्यों एवं एक नई सोच का जन्म। आधुनिकता समकालीनता की प्रथम कडी है। आधुनिकता पर चर्चा किए बिना समकालीनता पर चर्चा करना नामुमकिन की बात है। रवीन्द्र कालिया के अनुसार समकालीनता आधुनिकता के पीठ पर स्थित एक कालखण्ड है। अंग्रेज़ी शिक्षा के दौरान मनुष्य ने पहले आधुनिक बनना शुरू किया। भारत में भी अंग्रेज़ी शिक्षा के प्रचार प्रसार के दौरान हम भी बाहरी लोगों पर नज़र डालने लगे और उनके आचार विचार एवं रहन सहन को अपनाकर मार्डन (Modern) बन गये। पूर्ण रूप से हमारे भीतर की संवेदना रूपी जड़ों को उखाडना आसान कार्य नहीं। लेकिन बाहरी तौर पर आधुनिक है। दोनों स्थितियों में पडकर सब कुछ करने में असमर्थ बन जाते हैं। इस प्रकार आत्मसंघर्ष में पडे हुए मानव की संवेदना का नाम है आधुनिकता।

आधुनिकता ने ईश्वर एवं प्रकृति की जगह 'मनुष्य' को रखकर बाकी सभी को 'अन्य' बनाया। इसके तहत व्यक्तिवाद की भावना बडी। फलस्वरूप आधुनिक मानव अपने पारंपरिक समाज में जीनेवालों से अलग हो गया। इस प्रकार विशुद्ध वैयक्तिक अस्मिता आधुनिकता की विशेषता है। आधुनिकता की अन्य विशषताओं में उपभोक्तवाद, अलौकिक शक्तियाँ एवं देवी देवताओं में लोगों का अविश्वास, तार्किकता, बाज़ार, व्यक्ति का अकेलापन, भौतिकता आदि प्रमुख हैं। आधुनिकता

को और भी स्पष्ट करने के लिए इन्द्रनाथ मदान का विचार उल्लेखनीय है, उनके मुताबिक - "आधुनिकता वह प्रक्रिया है जहाँ स्वीकृत मूल्य अस्वीकृत होकर फिर बनते-मिटते-बनते रहते हैं। यह एक जीवन बोध और विश्वबोध है जिनके मूल में प्रश्न चिह्नों की निरंतरता है, मध्यकालीन शाश्वत और रोमांटिक बोध का विरोध है। यदि आधुनिकता एक प्रक्रिया है तो इसके एक से अधिक दौर है, जिनसे यह गुज़र चुकी है या गुज़र रही है।"[1]

आधुनिकता कई विचारधाराओं से निर्मित एक सोच है। उस समय बोधोदय से कई बौद्धिक एवं वैज्ञानिक सिद्धान्त पाश्चात्य जगत में उदित हुए। उन पाश्चात्य सिद्धान्तों का गहरा असर हिन्दी आधुनिकता में भी पड़ा। उनमें मुख्य विचारधाराएँ हैं मार्क्सवाद, मनोविश्लेषणवाद, अस्तित्ववाद, नई समीक्षा, यथार्थवाद, बिंबवाद, प्रतीकवाद। इसलिए उसमें सामाजिकता को महत्व देनेवाली एक साहित्यिक धारा और दूसरी व्यक्तिवादी धारा भी बहुत सशक्त एवं समृद्ध होकर अपने लिए अनुकूल दर्शन को आत्मसात कर साहित्यिक रचना में लगी हुई है। लेकिन इन दोनों धाराओं ने मनुष्य को केन्द्र में प्रतिष्ठित कर बिलकुल वैज्ञानिकता को आत्मसात किया। वहाँ 'अन्यों' की उपेक्षा हुई। पूँजीवाद एवं विचारधाराएँ केन्द्र में आईं। तर्क करके सभी को प्रमाणित करने की कोशिश हुई। इसके फलस्वरूप तर्कों से अप्राप्त सत्य गायब हो गया। मनुष्य के विश्वास एवं परंपरागत धारणाएँ, मिथक आदि मिटता जा रहा था। मनुष्य यांत्रिक होने लगा। अति उपभोग की संस्कृति रूपायित हुई। तब

---

1. इन्द्रनाथ मदान - आधुनिकता और हिन्दी उपन्यास - पृ. 5

इस प्रकार रूपायित आधुनिकता में सादगी, सहजता, मानवीयता, विश्वास, अन्य या बहुलता, स्वदेशीयता, स्थानीयता आदि का अभाव था। इसलिए ऐसी एक स्थिति में आधुनिकता की कमियों और दुर्बलताओं को दूर कर नई शक्ति से समकालीनता का आरंभ हुआ।

1.4 समकालीन परिस्थितियाँ

पहले ही बताया गया था कि समकालीन परिवेश हमारी समग्र चेतना का परिवेश है। आज जिस समय एवं काल में हम जी रहे हैं वह कई प्रकार से जटिल है। इस त्रासद स्थिति में वैश्वीकरण, आर्थिक उदारीकरण, बाज़ारवाद, उपभोग संस्कार जैसी पश्चिमी संस्कृति की गिरफ्त में है हम। इस चंगुल में फंसे आम आदमी की आवाज़ बाहर नहीं आती है। इस स्थिति को पहचानते हुए इसके साथ मिलाकर जीने के लिए हम विवश हो रहे हैं। इस विवशता का प्रतिफलन हमारे सामाजिक, धार्मिक, राजनीतिक एवं आर्थिक क्षेत्र में होते हैं। इसलिए सबसे पहले आज के नवऔपनिवेशिकता को समझना ज़रूरी है। वास्तव में नवउपनिवेशवाद ने ही हमारी सांस्कृतिक एवं सामाजिक विरासत को इतना विकराल बनाया।

1.4.1 नवऔपनिवेशिक स्थितियाँ

नवऔपनिवेशिक व्यवस्था में पूर्व उपनिवेशिक सत्ता अपनी उपनिवेशिकता पर वर्चस्व बनाने की कोशिश करती है। ये पूर्व उपनिवेशिकता से हम एक हद तक अवगत हैं। क्योंकि भारत ब्रिटन का उपनिवेश रहा था। उपनिवेश में जिस मानसिकता का प्रभुत्व है वह है साम्राज्यवादी मानसिकता या अधिकार जमाने की भावना। ये

अधिकार कहाँ-कहाँ पर लागू हैं? ये तो बौद्धिक, राजनैतिक, सामाजिक एवं सांस्कृतिक क्षेत्रों में हैं। उसने इस क्षेत्रों में अधिकार जमाकर गुलाम बनाने की प्रवृत्ति को आगे बढाया। डॉ. एन. मोहनन के वक्तव्य इस अवसर पर समीचीन होगा - "दीगरों के चाहे वह व्यक्ति हो या देश उसके शारीरिक, मानसिक, बौद्धिक, राजनैतिक, सामाजिक एवं सांस्कृतिक क्षेत्रों पर अपना अधिकार को जमाकर उसको निम्न या गुलाम लेने की प्रवृत्ति ही उपनिवेश है।"[1] इस उपनिवेशिक प्रभुत्व से भारत जैसे अनेक राष्ट्र छिन्न-भिन्न हो गये। फिर भी दूसरे विश्वयुद्ध के उपरान्त अनेक देश आज़ाद हुए। इसके तहत दुनिया भर के राज्यों के बीच में ये चिंताएँ जाग उठी हैं कि राजनैतिक व्यवस्था के रूप में साम्राज्यवाद क्षीण हुआ। इस क्षीणता से लाभ उठाकर अमेरिका का वर्चस्व होने लगा। माओसेतुङ ने 14 सितम्बर 1946 को लाटिन अमेरिका की कम्यूनिस्ट पार्टी के प्रतिनिधियों के साथ बातचीत के संदर्भ में इसका ज़िक्र किया था कि अमेरिकी साम्राज्यवाद दुनिया के आम लोगों का दुश्मन है। इस दुश्मनी में उन्होंने राजनैतिक, आर्थिक गुलामी के साथ साथ मानसिक गुलामी को भी स्थान दिया। क्योंकि मानसिक गुलामी के अभाव में राजनैतिक एवं आर्थिक गुलामी पूर्ण नहीं हो सकती। इस अवसर पर डब्ल्यू सैद का विचार सराहनीय है। उनका विचार यह है कि साम्राज्यवाद का अर्थ सिर्फ संपत्ति लूटना और दूसरों की धरती पर कब्जा करके संसाधनों का दोहन करना नहीं है। उसमें यह विचारधारा भी सम्मिलित है कि कुछ देश और लोग

---

1. नई धारा - फरवरी-मार्च 2010 - पृ. 52

शासित वर्ग ऐसे हैं जो सिर्फ शासक की भूमिका ही निभाते रहे। इससे हम समझ सकते हैं कि अमेरिका ने साम्राज्यवाद का नया एवं खतरनाक रूप धारण किया।

भारत जैसी तीसरी दुनिया आज अमेरिका के नये साम्राज्यवादी मुखौटे के पीछे हैं। लेकिन आज साम्राज्यवादी शक्तियाँ इससे वाकिफ़ हैं कि सिर्फ ताकत के बल पर विश्व की जनता को सीधे तरीके से कब्जे में रखना आसान नहीं। इसलिए अप्रत्यक्ष तरीकों को अपनाकर विश्व को अपने अधीन में रख दिया गया। यह अप्रत्यक्ष तरीका है नव-उपनिवेशवाद। दूसरे शब्दों में कहा जाये तो विकसित देशों द्वारा विकासशील या अविकसित देशों में कर रही कार्यवाहियों का नाम है नवऔपनिवेशवाद। भारत भी नवउपनिवेशिक संस्कार का गुलाम बन रहा है।

बीसवीं शताब्दी में आकर उपनिवेश का काला हाथ तो दुर्बल हो गया। हम जानते हैं कि सागर कितनी दूरी में पीछे की ओर जाता हैं, उतने से ज़्यादा दूरी में आगे की ओर बढ़ता है। यह स्थिति सबसे खतरनाक प्राकृतिक घटना है। इस तरह दुर्बलता से आगे आने के लिए साम्राज्यवादी शक्तियों ने एक नया रूप धारण किया। वह है - नव उपनिवेशवाद। "अपने ताकत को बनाये रखने के लिए उपनिवेशवाद का नया रूप नवउपनिवेशवाद ग्रहण कर लिया। ....आर्थिक सहायता या अन्य रूपों के ज़रिए वे इन देशों को अपने माल की मंडियों के रूप में कच्चे माल बनाये रखते हैं।"[1] अर्थात ये नयी पद्धति तीसरी दुनिया के देशों को अपना

---

1. अयोध्या सिंह - साम्राज्यवाद का उदय और अस्त - पृ. 558

उपनिवेश बनाने की तैयारी है। उपनिवेश में यूरोपीय आधिपत्य है तो नवउपनिवेश में अमेरिका का आधिपत्य था। अमेरिका अपने वर्चस्व बनाने की कोशिश "प्रत्यक्ष न होकर परोक्ष एवं निराकार है। इसका कारण वर्तमान वैश्विक नीतियाँ है। विश्व की वर्तमान नीतियाँ एवं वैश्विक संगठन ने प्रत्यक्ष उपनिवेश पर रोक लगाई है।"[1]

उपनिवेशवाद में तो साम्राज्य का विस्तार एवं नवउपनिवेशवाद में अर्थ की प्रधानता है। भारत जैसे विकासशील देशों पर आर्थिक शोषण करना वे चाहते थे। इसके लिए उन्होंने भूमंडलीकरण (Globalisation), उदारीकरण (Liberalisation), निजीकरण (Privatisation) आदि से हमारे पास आकर कूटनीति तैयार की। आर्थिक क्षेत्रों में उदारीकरण का कोई लेना देना नहीं है। इसका सीधा अर्थ है विकासशील देश अपनी आयात नीतियों को इतना उदार बनाना और बडे देश की वस्तुओं के आयात के लिए कोई बाधा नहीं होगी। इसका अंतर्निहित उद्देश्य "छोटे देशों के उद्योग धन्धों को लुज-पुंज कर यहाँ की अर्थव्यवस्था पर पूँजीपति देशों का एकाधिकार स्थापित करना है।"[2] अर्थात् बडे देशों के आर्थिक तंत्र में छोटा देश आसानी से आ जाता है। वे उदारीकरण नाम से अपनी अर्थव्यवस्था को नष्ट करते हैं। नव उपनिवेशवाद में शोषण विस्तृत दायरे में है तो उपनिवेशवाद में सीमित दायरे में है। "Neo colonialism is very specific kind of thing, which is different from the old forms of colonisalism and imperialism."[3]

---

1. अयोध्या सिंह - साम्राज्यवाद का उदय और अस्त - पृ. 558
2. मधुमती - 1999 - पृ. 27
3. Online Magazine - www.neocolonism

साम्राज्यवाद के दो रूप हमारे बीच में हैं। एक तो साम्राज्यवाद का बदला हुआ रूप नवउपनिवेशवाद, दूसरा तो अमेरिका जैसे विकसित देशों की फासीवादी मानसिकता। वास्तव में दोनों का नेतृत्व अमेरिका ही कर रहा है। इसलिए उन्होंने बुद्धि को अपनाया। विज्ञान, तकनीकी एवं बाज़ार के ज़रिए वे हम जैसे तीसरी दुनिया को शोषण कर रहे हैं। GATT, International Monetary Fund and World Banks, World Trade Organisation और G-8 जैसे सहायता देनेवाले संगठन को सहायता के रूप में दिया। इन्हीं के आधार पर यहाँ बहुराष्ट्र कंपनियों का आगमन हुआ। कंपनियों में काम करनेवालों की बुद्धि को भी उन्होंने खरीद लिया। नवउपनिवेशवाद की स्थितियों में एक है भूमंडलीकरण। यह भी पाश्चात्य अवधारणा है। सोवियत संघ के विघटन उपरान्त विश्व भूमंडलीकरण की प्रक्रिया से संचालित था। भूमंडलीकरण की प्रक्रिया पहले सोद्देश्यपूर्ण था। प्रभाखेतान इसके बारे में यों कहती हैं - "भूमंडलीकरण वह प्रक्रिया है जो वित्त-पूँजी के निवेश, उत्पादन और बाज़ार द्वारा राष्ट्रीय सीमा में ही वर्चस्वी नहीं, बल्कि राष्ट्रीय सीमा से परे भूमंडलीय आधार पर निरंतर अपना प्रसार करना चाहती। इनका निर्णय क्षेत्र सारी दुनिया है।"[1] विकसित देश एवं तीसरी दुनिया के बीच की आर्थिक दूरी को मिटाने के लिए खडे है। लेकिन भूमंडलीकरण की नीति में बदलाव आ गया। अमेरिका इसमें षड्यंत्र बनाकर अपनी ताकत दुनिया भर फैलाने लगा। आज भूमंडलीकरण का लक्ष्य क्या है? मैंनेजर पाण्डेय लिखते हैं - "भूमंडलीकरण का लक्ष्य है - पूँजीवाद को दिग्विजय बनाना, सारी दुनिया को पश्चिमीकरण

---

1. प्रभाखेतान - भूमंडलीकरण ब्रांड संस्कृति और राष्ट्र - पृ. 15

करना, जिसका वास्तविक अर्थ है अमेरिकीकरण। इसका परिणाम होगा मानव समाज में आर्थिक विषमता का विस्तार, प्रकृति तथा पर्यावरण का विनाश और हिंसा की संस्कृति का उत्तरोत्तर प्रसार, जो पूँजी की संस्कृति की अनिवार्य विशेषताएँ हैं।"[1] भूमंडलीकरण के परिणाम स्वरूप होनेवाली आर्थिक विषमता, विकास के कारण विनाश में पडी प्रकृति, हिंसा वृत्ति, आदि पर हम सोचते बिना उपनिवेशिक जैसा बन जाना ही अपना परम लक्ष्य मानते हैं। यह तो दासता की भावना है और कुछ नहीं।

साम्राज्यवादी देशों द्वारा बनाये भूमंडलीय समाज राजनीतिक, सामाजिक और सांस्कृतिक दृष्टि से किस तरह बदल रहा है, इसका ज़िक्र स्टिग जार्वर्ड ने इस प्रकार दिया है - "भूमंडलीकरण ने हमारे दैनिक जीवन के सामने भी चुनौती प्रस्तुत कर दी है। हमारा काम, भोजन, यात्रा, हमारा आराम और मनोरंजन सभी भूमंडलीकरण की प्रक्रिया का हिस्सा बन चुका है। कुछ लोगों के लिए भूमंडलीकरण का अर्थ है एक नया और उत्साहवर्धक यथार्थ जो आज के नये स्रोतों नए नए रमणीय स्थानों के अनुभव और नई तरह के पकवानों के आस्वादन की संभावनाओं को प्रस्तुत करता है। लेकिन दूसरों के लिए इसका अर्थ है विदेश चले जाने के कारण बेरोज़गार होने, ऐसे नए पड़ोसी जिनके रीतिरिवाज़ आपसे अलग है और जो आपकी भाषा नहीं बोलते तथा टेलिविज़न पर दुनिया की ऐसी तस्वीरें जिन पर पुराने नियम कायदे लागू नहीं होते।"[2] भूमंडलीकरण का क्षेत्र मनोरंजन, एवं यात्रा

---

1. मैनेजर पाण्डेय - आलोचना की सामाजिकता - पृ. 165
2. साहित्य अमृत 2015 - पृ. 120

तक सीमित नहीं युद्ध, आक्रमण, नरसंहार जैसे अमानवीय स्तरों तक फैला है। कमल नयन काबरा ने ठीक कहा - "भूमंडलीकरण का कार्यक्षेत्र तकनीक, निवेश और निर्माण तक सीमित नहीं है, अपितु युद्ध, आक्रमण, नरसंहार और विनाश आदि आयामों तक फैला हुआ है।"[1] यह भूमंडलीकरण आज की सबसे बडी चालक शक्ति ही है। क्योंकि यह एक बाज़ारु अवधारणा है। ये बाज़ार हमें मोहित करते हैं। अशोक वाजपेयी का कथन इसको और भी स्पष्ट करता है - "यह एक बाजारु अवधारणा है। भूमंडलीकरण किसका? भूमंडलीकरण पूँजी का मुख्य रूप से बाज़ार का।"[2] पूँजी का वर्चस्व को आगे बढ़ने के लिए भूमंडलीकरण के खतरनाक घटक क्या है - क्या हैं? यह देखना ज़रूरी है।

1.5 भूमंडलीकरण के खतरनाक घटक

1.5.1 अंतर्राष्ट्रीय उद्योग

व्यवसाय पहले से ही चलता था। लेकिन बीसवीं शताब्दी में यातायात एवं सूचना पद्धति का विकास हुआ। इसी के आधार व्यवसाय जो है विस्तृत क्षेत्र तक पहुँच गया। बैकिंग, बीमानिगम एवं अन्य सेवाएँ इसमें अपनी भूमिका निभा कर रही हैं। ये व्यवसाय राज्य GDP (Gross Denstic Product) का बडा हिस्सा बन गया है। व्यापार को सुगम बनाने के लिए विश्व व्यापार संगठन के TRIPS और GATTS कार्य करते हैं। इस नीतियों का हिस्सा बनना अविकसित एवं विकासशील देशों की नीति बन गया।

---

1. कमल नयन काबरा - भूमंडलीकरण के भँवर में भारत - पृ. 46
2. माध्यम 2006 - जनवरी-मार्च - पृ. 37

1.5.2 उदारीकरण (Liberalisation)

यह तो नई अर्थनीति है। इस नीति में बाज़ार की स्वतंत्रता है। "Liberalization refers to relaxation of previous government restrictions usually in areas of social and economic pesticides"[1] अर्थात स्वदेशी व्यवसाय का नाश करना ही इसका लक्ष्य है। आर्थिक संकट का सामना करनेवाले देशों को ऋण देना ही इसका और एक लक्ष्य है। राजकिशोर ने Liberalization के लक्ष्यों पर विचार इस प्रकार किया है-

1. अर्थ व्यवस्था का खुलापन यानी देशी उद्योग के मामले में सरकारी नियंत्रणों को समाप्त करना तथा विदेशी निवेश के लिए दरवाज़ा खोलना।
2. राजनीतिक क्षेत्रों को घटाना तथा निजी क्षेत्र का दायरा बढ़ाना।
3. बाज़ार की शक्तियों का ज़्यादा मौका प्रदान करना।
4. सबिसडी कम करना, ताकि राजकोष पर दबाव कम किया जा सकता।
5. मुद्रा स्फीर्ति की दर को नियंत्रित करना।"[2]

उदारीकरण की इन शर्तों पर नज़र डालते तो मालूम हुआ कि यह तो पूँजीवादी वर्चस्व का दरवाज़ा है। 1989 तक भारत की स्थिति एक दम अच्छी थी लेकिन इसके बाद आर्थिक स्थिति में बदलाव आ गया, कारण तो राजनीतिक पक्ष था। "नवंबर 1990 से मार्च 1991 के बीच दो सरकारें गिरी। फरवरी 1991 में

---

1. www.businessdictionary.com
2. राजकिशोर - उदारीकरण की राजनीति - पृ. 42

केन्द्रिय बजट समय पर पेश नहीं किया जा सका। राजनीतिक तदर्थता - मई जून 1991 में होनेवाले चुनाव तक खिंचती रही। इन चुनावों के दौरान एक पूर्व प्रधानमंत्री की हत्या तक हो गई। इन सब घटनाओं और स्थितियों के चलते महाजनों का भारत पर से भरोसा काफी कम हो गई। अंतर्राष्ट्रीय पूँजी बाज़ार में भारत की साख-दर (Credit Rating) काफी कम हो गई। अंतर्राष्ट्रीय ऋणदाताओं से कर्ज मिलना बंद हो गया।"[1] भारत ने 1991 में आर्थिक मंदी से बचने के लिए IMF से 180 करोड डालर ऋण लेकर उपयोग किया वहाँ से भारत में वैश्विक आर्थिक नीति का उपयोग हुआ। हम निसंदेह कह सकते हैं कि बाज़ार की अर्थव्यवस्था में सुरक्षा कवच बनाना उदारीकरण का उद्देश्य था लेकिन बाज़ार का काम तो ज़्यादा से ज़्यादा मूनाफा कमाना है।"[2]

1.5.3 निजीकरण (Privatization)

यह तो अर्थव्यवस्था पर पुनर्विचार करनेवाली नीति है। "अनिश्चित लाभ के लिए निश्चित लाभ को नज़रअंदाज करनेवाली प्रक्रिया।"[3] गाट में सेवा उद्योग, किसानी, स्वास्थ्य एवं शिक्षा को सम्मिलित कर निजीकरण की परिभाषा और भी तीव्र बनाया। आज हमारी संस्कृति का हर एक पहलू निजीकरण पर है। इस निजीकरण में पेटेंट की व्यवस्था खतरनाक रूप में सामने आयी। इस व्यवस्था में निर्माता को तोडकर पहले प्रस्तुत करनेवालों को पेटेंट मिलता है। हमारी औषधियों

---

1. राजकिशोर - उदारीकरण की राजनीति - पृ. 42
2. अमित भादुडी, दीपक नाय्यर (सं) - उदारीकरण सच - पृ. 30-31
3. डॉ. व्रजकुमार - भूमंडलीकरण विविध आयाम - पृ. 15

एवं वनस्पतियों का पेटेंट विदेशियों के हाथ में है। भविष्य में भी निजीकरण और भी खतरनाक बन जायेगा।

1.5.4 नव उदारवाद (Neo Liberalization)

भूमंडीलकरण का एक नया कुचक्र है नवउदारवाद। हमारे यहाँ की चीज़ों का मूल्य का निर्णय तो हम नहीं करते। वह पूँजीवादी कंपनियों का धर्म है। मज़दूर लोगों ने अनेक कठिनाइयों का सामना करके इसका उत्पादन किया। फिर भी वह आजीविका चलाने के लिए तडप रहा है। हमारी सरकारों की वापसी इसका और कारण थी। नवउदारवाद में सार्वजनिक क्षेत्र (स्वास्थ्य, खेती, शिक्षा) से सरकार को हटाने का कार्य है। उन्होंने राज कोषीय अनुशासन, सार्वजनिक व्यय में कटौती, व्यापार का उदारीकरण, निजीकरण, विनिमयों की समाप्ति, उन्मुक्त संपत्ति का अधिकार कर संबन्धी सुधार आदि पर पूँजीवादी दृष्टि डाली। गिरीश मिश्र ने नव उदारवाद की तीन बातों पर विशेष दृष्टि डाली। वे इस प्रकार हैं-

1. राज्य की भूमिका और हस्ताक्षेप की संभावना को न्यूनतम बनाना।
2. श्रम और वित्तीय बाज़ारों को पूरी तरह उन्मुक्त कर बाज़ार की शक्तियों का हवाला करना।
3. वाणिज्य और निवेश के रास्ते में आनेवाले सब रुकावटों को हटाना। जिससे श्रम, पूँजी, वस्तुएँ और सेवाएँ बेरोकटोक आ जा सके।"[1]

---

1. गिरीश मिश्र - बाज़ार और समाज - विविध प्रसंग - पृ. 21

प्रसिद्ध फ्रेंच समाज-शास्त्री और दार्शनिक पियरे बोर्दिओ ने उदारवाद का सार बताया है कि "असीमित शोषण का मनोवांछित लोक कायम करना। दूसरे शब्दों में नवउदारवाद ऐसी स्थिति का सृजन करना चाहता है, जहाँ वह बिना प्रतिरोध के संसाधनों का दोहन और श्रम का शोषण करके मुनाफा कमाकर पूँजीपति और भी धनाट्य बन जाते हैं। नव उदारवाद में निजीकरण, उदारवाद आदि का परोक्ष सहायता होता है।

1.5.5 विशेष आर्थिक क्षेत्र (Special Economic Zone)

इसमें प्रत्येक स्थल पर व्यापार होता है। यह व्यापार मुक्त बाज़ार में चल रहा है। याने उत्पादन एवं वितरण इसी बाज़ार से होते हैं। इस zone में वहाँ के राष्ट्र के आर्थिक एवं अन्य नियम लागू नहीं है। बाज़ार से श्रमिकों की मेहनत से ज़्यादा फायदा उठाया जाता है। उनकी ज़रूरत नहीं है तो उसे अपने अधिकारों से वंचित होकर निकाला जाता है। SEZ कहाँ पर लागू है हम देखेंगे-

"Free Trade Zone (FIZ)

Export Processing Zone (EPZ)

Free Zone (FZ)

Industrial Parks

Industrial Estate

Free Parts

Urban Enterprise Zone

Qualifying Industrial Zone (QIZ)

Assian Free Trade Area"[1]

1.5.6 बहुराष्ट्रीय कंपनियाँ

अंतर्राष्ट्रीय व्यवसाय की वृद्धि के फलस्वरूप बहुराष्ट्रीय कंपनियों की स्थापना तो हुई। दो या दो से अधिक राज्यों के बीच बहुराष्ट्रीय कंपनियों ने अधिकार जमाया। स्टॉक इसमें वितरित होते थे। कंपनियों का आधिपत्य बाज़ार पर था। राज्यों की नीति यह है कि कंपनियों द्वारा विदेशी पूँजी निवेश (Foreign Direct Investment, FDI) में वृद्धि होगी। यह तो सरकार की नीति है लेकिन कंपनियों की चिंता में कुछ फर्क है "मूल्यों एवं संसाधनों का स्थानांतरण.... अर्थव्यवस्था के मूल क्षेत्र पर विदेशी नियंत्रण.... तकनीकी एकाधिकार.... प्रतिस्पर्धा और बाज़ार का नेतृत्व.... धन का प्रस्तावना।"[2] इस चिंता के ज़रिए भारत जैसे देश में एल जी, सोनी, मकडोनाल्ड जैसी कंपनियाँ अपना ताल बजाती हैं। हम उसके ताल के अनुरूप नाच रहे हैं। कुलमिलाकर कहा जाये तो विदेशी ताल में स्वदेशी नाच। दुनिया के बहुत बडे भाग आज इसी प्रकार की बहुराष्ट्रीय कंपनियों के हाथ में सुरक्षित हैं।

1.5.7 विदेशी पूँजी का निवेश (Foreign Capital Investment)

विदेशी पूँजी निवेश (FDI) के ज़रिए विदेशीय कंपनि दूसरे राज्य में स्थित कंपनी को खरीदती है। और उसके साथ व्यापारिक संबन्ध करते हैं। इस

---

1. www.wikipedia.com
2. डॉ. ब्रजकुमार पाण्डेय - भूमंडलीकरण - विविध आयाम - पृ. 62-63

व्यवस्था में अधिक से ज़्यादा शेयर किसके पास है वह पूर्ण आधिपत्य जमाता है। यहाँ शेयर का मतलब है 'सबसिडियरी स्टॉक'। कंपनियों के निर्माण में SEZ (Special Economic Zone) का उपयोग किया जाता है। SEZ में सीधे तरीके से उत्पादन एवं वितरण संभव है।

1.6 भूमंडलीकरण को सशक्त बनानेवाले संगठन एवं नीतियाँ

1.6.1 गाट (GATT - General Agreement on Tariff and Trade)

गाट को हम गाट समझौता के तहत व्याख्यातित करते हैं। इसका गठन 1947-48 में हुआ। वह व्यापारिक समझौता को बनाये रखने में सफल हुआ। इसके तहत अंतर्राष्ट्रीय व्यापार को सुगम बनाने का कार्य एवं व्यापारिक सिद्धान्तों पर आधारित सेवा को निर्धारित करते हैं। 1999 में राष्ट्र ने इससे समझौता की। 1980 में डोलर का मूल्य कम हो गया। इस पतन के कारण सब राष्ट्रों ने समझा कि अमेरिका अपने बाज़ार को सबके सामने खोल दिया। लेकिन तीसरी दुनिया के लोग वहाँ न पहुँचे। गाट भी अच्छा कार्य करने के लिए था, वहाँ भी अमेरिका की कूटनीति का प्रयोग हुआ। इसलिए गाट की शर्तों के साथ Service Sector, Intellectual Property, Agriculture, Foreign Capital Investment आदि को जोडा गया। इसी से उनकी नीति में थोडा बदलाव आया - "इसी दौरान गाट एक संस्था के रूप में विकसित होता है जो मानवीय अधिकारों एवं अन्य सामाजिक तथा पर्यावरण संबन्धी प्राथमिकताओं के ऊपर निगमों के अधिकार को प्रोत्साहित करता है। इसके अंतर्गत कोई भी सरकार एक सीमा तक ही पर्यावरण, भोजन और

उत्पादन के मानकीकरण पर कानून बना सकती है। गाट का उद्देश्य था कॉरपरेट बौद्धिक संपदा को नए रूप में संरक्षित करना। इसी से अमीर देशों को एकाधिकार की सुविधा मिली। विकासशील एवं अविकसित देशों के ऊपर गाट के नियम लागू हुए।"[1] 1994 में 125 राष्ट्र गाट समझौता में आ गये।

1.6.2 विश्व व्यापार संगठन (World Trade Organisation)

1995 जनवरी 1 में गाट के स्थान पर World Trade Organisation की स्थापना हुई। प्रभा खेतान इसके उद्देश्य को यों व्यक्त करती हैं - "1994 में उरुग्वे ने पुराने गाट के व्यापारिक समझौते को एक नई संस्था में परिवर्तित किया जिसका नाम है - विश्व व्यापार संगठन। यह पहले की तुलना में और अधिक शक्तिशाली या इसकी अपनी नौकरशाही थी। इसका काम था यदि किसी देश की नीति, इन बहुराष्ट्रीय निगमों के स्वार्थों से टकराती हो तो उस पर प्रतिबंध लगाना। उद्धेश्य था कि जब विदेशी ज़मीन पर निगम काम करता है तो इनकी कार्यवाही में राष्ट्रीय सरकारें हस्ताक्षेप न कर सकें। यानी विश्व व्यापार संगठन की मांग ही सर्वोपरी थी और इसके विरोधियों को तमाम तरह के व्यापारिक प्रतिबंधों का सामना करना पडा था।"[2] स्वास्थ्य, शिक्षा, पानी, खेती आदि व्यापार के पक्ष में आ गये। इसलिए गाट से भी खतरनाक है WTO. विश्व व्यापार संगठन ने विकासशील एवं अविकसित देशों के जैविक रूप को हडपने की प्रवृत्ति को बढावा दिया। इसका संरक्षक भी अमेरिका है।

---

1. प्रभाखेतान - बाजार के बीच बाजार के खिलाफ - पृ. 29
2. वही - पृ. 29

1.6.3 अंतर्राष्ट्रीय मुद्रा कोष और विश्व बैंक

अंतर्राष्ट्रीय मुद्राकोष एवं विश्व बैंक की स्थापना United Nations Monetary Economic Conference में हुई। यह तो 1944 में था। विकासशील देशों को आर्थिक सहायता देना इसका लक्ष्य था। रुपयों के मूल्य को कम करना, अंतर्राष्ट्रीय व्यापार को बढ़ावा देना आदि के तहत आर्थिक सहायता की पूर्ति करती है। दूसरे विश्वयुद्ध के उपरान्त होनेवाली आर्थिक मंदी से बचाने के लिए जे.एम. कैईस नामक अर्थशास्त्री ने एक उपाय दिया। उन्होंने निश्चय किया कि ऐसे भूमंडलीय निज़ाम की रचना की जाए तो किसी नई नौकरशाही स्वतंत्र बाज़ार के नए नियमों को संचालित करे। और इसी का परिणाम है विश्व बैंक और अंतर्राष्ट्रीय मुद्राकोष। G-7 राज्यों के हाथों की कठपुतलियाँ हैं हम जैसे विकासशील देश।

जोसेफ स्टिल्लिज अपनी पुस्तक 'ग्लोबलइजेशन एंड डिस्कटेट्स' में लिखते हैं - "भूमंडलीकरण मुक्त व्यापार के लिए बाधाओं का हटना है और राष्ट्रीय अर्थव्यवस्थाओं का अधिकाधिक जुडाव है।"[1] अर्थात् वर्तमान बहुराष्ट्रीय पूँजीवाद अथवा भूमंडलीकरण वित्तीय पूँजीवाद के ही सर्वव्यापारिकरण का लक्ष्य को लेकर आया है।

सारांश यह है कि इस प्रकार की नयी संस्थाएँ एवं नई योजनाएँ यहाँ पूँजी की जड़ों को मजबूत कराने में सहायक बन गयी है। इस से निर्मित है भारतीय अर्थतंत्र। इसका प्रभाव भारत की राजनीति, समाज एवं संस्कृति पर पड रहा है।

---

1. अनभै साँचा - संयुक्तांक-2014 - पृ. 34-35

1.7 सामाजिक एवं सांस्कृतिक परिदृश्य

आज का सइबर युग है, इन्डरनेट का उपयोग बढ रहा है। रागात्मक भावों की लुप्तता एवं मस्तक याने बौद्धिकता की वृद्धि हो रही है। समाज में भाईचारा, सत्य, अहिंसा, मैत्री, दया, सहयोग जैसे भावों के प्रति उपेक्षा एवं उदासीनता हम देख सकते हैं। क्योंकि पाश्चात्य जीवन पद्धति का प्रभाव भारतीय जीवन पर बढता जा रहा है। डॉ. पशुपतिनाथ उपाध्याय के मुताबिक - "परिचम का सहन-सहन, खान-पान और बोलचाल का अनुकरण करना गौरव की बात समझी जाती है। लेकिन वैचारिक उदारता, चिन्तन की गहनता, कर्मठता, लगन और दायित्वबोध जैसे पश्चिमी मूल्यों से परहेज बढता जा रहा है।"[1] इसके तहत बाज़ार चीजों में तब्दील हो गये। याने बाज़ार चमत्कारिक लावण्य का खजाना बन गया। इसी चमत्कार में युवापीढ़ी सम्मोहित होती है। फलस्वरूप हमारे नैतिक मूल्यों का ह्रास हो रहा है। हम से पिता, माता, प्रेमी, मित्रता, पर्यावरण आदि दूर हो रहे हैं। उसकी याद में अनेक दिवस जैसे फार्देस डेय (Father's Day), मर्देस डेय (Mother's Day), फ्रंडशिप डेय (Friendship Day), वालंडैन्स डेय (Valentien's Day) आदि उदाहरण हैं। फिर भी स्थानीयता की झलक इसमें हम देख सकते हैं।

भारत सांस्कृतिक संक्रमण के दौर से गुज़र रहा है। हम सांस्कृतिक दबावों का सामना पहलीबार नहीं कर रहा है। अतीत में देखा जाए तो विदेशों का आक्रमण हुआ है। उन्हीं के हाथों से नई-नई सांस्कृतियों का बीज बोया गया हैं।

---

1. डॉ. पशुपतिनाथ उपाध्याय - समकालीन हिन्दी कविता दशा और दिशा -पृ. 118

लेकिन भूमंडलीय संस्कृति से उत्पन्न पश्चिमी संस्कृति ने सांस्कृतिक संक्रमण को रोका। फिर भी वे अपने को परंपरानुवर्ती साबित करने के प्रयास में 'विश्वग्राम' जैसे नारा लेकर आये। लेकिन हमें पता है सांस्कृतिक विघटन इस संस्कृति का लक्ष्य है। इसलिए वे सारे विश्व के लिए एक ही संस्कृति, एक ही जीवन शैली, एक ही चिंतन प्रणाली देने के पक्ष में हैं। वास्तव में सांस्कृतिक संक्रमण में आदान एवं प्रदान भी होते हैं, आज की संस्कृति में आदान ही होता है, प्रदान नहीं के बराबर है। यह भयावह परिस्थिति देखकर-

"यह भयावह समय है दोस्तो
जब मुझे भी पता नहीं है
अगले पल क्या सोचेगा मेरा दिमाग
और इस समय सबसे ज़्यादा जरूरी है
अपने भीतर के लालच से लड़ना।"[1]

यह भयावह समय है, क्योंकि हम अपसंस्कृति को अलंकरण के रूप में धारण करते हैं। वे पर्यावरण, रुचि एवं खान-पान, वर्तमान सब का अपने अनुकूल बदलने का प्रयास करते हैं। ध्यान देने की बात यह है कि यह साम्राज्यवाद जिस नीति को देता है उसका पालन वे खुद नहीं करते। यह हमें उनका गुलाम बनाने की नीति है।

1.8 राजनीतिक एवं धार्मिक स्थितियाँ

सांस्कृतिक संक्रमण से गुज़रकर भारत बदल रहा है। यह बदलाव 1960 के आसपास से दिखाई पडने लगा। वहाँ से लेकर भ्रष्टाचार का मामला उग्र रूप

---

1. मधुमती - मार्च-2013 - पृ. 42

धारण कर आ रहा है। 1963 में पंजाब के मुख्यमंत्री प्रतापसिंह केरोज के विरुद्ध 'दास कमीशन का गठन', 1969 में ग्यानी सेलसिंह के विरुद्ध 'गुरुदेव सिंह कमीशन' का गठन हुआ था। राजनीति से संबन्धित दोनों घटनाओं से हमें मालूम हो जाता है कि जब राजनीति में भ्रष्टाचार आ गया तब जनता उसके विरुद्ध आवाज़ उठाने लगी। नेहरु का रास्ता भी अच्छा नहीं था। 1964 में उनकी मृत्यु हुई। मृत्यु के उपरान्त भारतीय राजनीति में हल चल मचा गया। रवीन्द्र केलोकर का विचार यहाँ समीचीन होगा, उनके अनुसार - "....अपना रास्ता गलत था, यह जवहरलाल नेहरु को आखिर में महसूस हो गया। रास्ता बदलने का निश्चय करने के पहले ही वे चल बसे। दुर्भाग्य से उनके उत्तराधिकारी उसी गलत रास्ते पर चलते रहे।"[1] इसी बीच भारत-पाकिस्तान के बीच युद्ध हुआ। नब्बे प्रतिशत लोग वास्तव में युद्ध के खिलाफ थे। परिणामस्वरूप नये नये राजनीतिक दलों का उदय हुआ, 1967 में समाजवादी पार्टी का उदय हुआ। जनता इस पर विश्वास करने लगी। राजनीतिक दलों ने इस अवसर का उपयोग किया। फलतः यह हुआ कि - "...राजनीति के साथ जुडे सांप्रदायिक दलों ने अपना सिर भी ऊँचा किया, परिणामतः अहमदाबाद में सांप्रदायिक दंगों ने उग्र रूप दिखाया। इसका बहुत बडा झटका आम नागरिक को मिला और सांप्रदायिक ताकतों ने देश के सामने नयी समस्या का निर्माण किया। 1969 के इस गुजरात (अहमदाबाद) दंगे का प्रभाव भारत के विस्तृत भूभाग पर पडने से राजनीति के प्रति फिर से जनता में असंतोष की भावना उदित हुई। यही नहीं 1970 में फिर से भिवंडी में सांप्रदायिक दंगा

---

1. नयाज्ञानोदय - जनवरी 2009 - पृ. 21

हुआ। इसका प्रभाव राजनीति पर पडा। इसी तरह से 1970 से ही राष्ट्रीय विचार प्रणाली का नए रूप में प्रादुर्भाव भी हुआ और राजनीति में नई चेतना आयी।"[1] 1975 में इंदिरागाँधी ने आपात कालीन कानून लागू किया। 1977 के चुनाव में इंदिरागाँधी हार हुई। 1980 में उनपर विश्वास फिर आया, परिणाम स्वरूप उनकी जीत हुई। वास्तव में 1980-90 तक राजनीतिक परिवेश संकटों से भरपूर था। इसी बीच 1984 में पंजाब की सांप्रदायिकता ने इन्दिरागाँधी को बली ले ली। इसके बाद राजीव गाँधी, विश्वनाथ प्रताप सिंह, चंद्रशेखर, नरसिंह राव, वाजपेयी, मनमोहन सिंह आदि सत्ता में आये। 2014 के बाद नरेन्द्र मोदी सरकार अधिकार में आयी। आज कई प्रकार से सरकारों की ओर से मानवाधिकारों का ध्वंस हो रहा है। आज की भयावह स्थिति यह है कि प्रजा मात्र एक तंत्र (मशीन) हो गयी है। राजनेता या मंत्री के लिए राजनीति एक पेशा बन गया है और जनता शतरंज के मोहरे। अपने तथाकथित स्वार्थों में निमग्न होकर राजनेताओं ने देश में पारस्परिक संघर्ष, प्रांतीयता, जातिवाद एवं भाषा के विवाद के बीज बोकर अपना स्वार्थ सिद्ध किया। उनका प्रमुख ध्येय जनसेवा न होकर सत्ता को सुरक्षित रखना है।

1.9 भारत का आर्थिक परिवेश

हमें ज्ञात होता है कि अर्थ व्यवस्था सार्वजनिक एवं वैयक्तिक क्षेत्रों का समन्वित रूप है। आज इसमें बदलाव आया है। आज भारत की अर्थव्यवस्था विदेशी सहायता पर निर्भर हुई। इसलिए हम निस्संदेह कह सकते हैं कि हमें

---

1. डॉ. पंडित गायकवाड - राजेश जोशी - सृजन के आयाम - पृ. 46

राजनीतिक स्वतंत्रता मिली है, देश को आर्थिक स्वतंत्रता मिलना अब भी बाकी है। नरसिंह राव सरकार के समय यहाँ पूँजीनिवेश अधिक मात्रा में हुआ। पशुपतिनाथ उपाध्याय के मुताबिक - "विदेशी पूँजी निवेशकों ने नरसिंह राव सरकार के समय सर्वाधिक पूँजी निवेश भारत में किया। इस युग में अधिकांशतः अस्थायी केन्द्रित सरकारों रही तथा मिली-जुली सरकारों बनीं। इसलिए सत्ताधारी वर्ग की पूँजीवादी मानसिकता बन गयी। जिसके परिणाम स्वरूप 'विदेशियों और भारतीयों ने बडे-बडे उद्योगों की स्थापना की।"[1] उद्योग एवं कृषि उत्पादनों में आशातीत बढोत्तरी हुई। मूल्यवृद्धि पर नियंत्रण हुआ, बीस सूत्रीय कार्यक्रम जैसी विकास योजनाएँ लागू की गईं। नतीजा यह हुआ कि आय बढ़ने लगा, राष्ट्र प्रगति की ओर अग्रसर होने लगा। एक हद तक विदेशी नीति सफल हुई। इंदिरा गाँधी ने गरीब देशों को धनवान बनाने के उद्देश्य से बैंकों की राष्ट्रीय पंचवर्षीय योजनाओं से वाणिज्य एवं व्यापार में वृद्धि लाने के लिए विदेशी पूँजी निवेश ने प्रशंसनीय कार्य किया। लेकिन राजनैतिक लक्ष्य रखनेवालों ने इसमें सहयोग नहीं दिया। गरीब और भी गरीब हो गया।

सर्वहारा वर्ग का आर्थिक संतुलन का कर्तव्य है। हर एक राष्ट्र की अर्थ व्यवस्था उसका मेरुदण्ड है। आज बाज़ार के विस्तार के लिए नए रिश्ते गढ़े जाते हैं। इन नए रिश्तों में विशेष आर्थिक क्षेत्र (SEZ) को मूर्त किया जाता है। जहाँ से मॉल संस्कृति विकसित होती है। माल खुदरा व्यापार को ध्वस्त करने का हथियार

---

1. डॉ. पशुपतिनाथ उपाध्याय - समकालीन हिन्दी कविता दशा और दिशा - पृ. 84

है। तो इस प्रकार के हथियारों से हाथ जोड़कर 'नए भारत का उदय' की परिकल्पना की जा रही है। आज देश में सेज़ (SEZ) काम कर रहे हैं। हज़ारों की संख्या में उसका विस्तार होता है। पूँजी की साम्राज्यवादी व्यवस्था में इस प्रकार सेज का विस्तारीकरण अनिवार्य प्रक्रिया हो रही है। लोकतंत्र में आम जनता को इससे सचेत रहना चाहिए। भारत में भी आन्दोलन धर्मी नेतृत्व में SEZ के प्रतिरोध में खडा था। नदीग्राम के 3प्रखंडों के 493.75 वर्ग एवं कुछ किलोमीटर के 90 वर्ग किलोमीटर के हरे-भरे उपजाऊ क्षेत्र में पश्चिम बंगाल सरकार ने सेज़ खडा करना चाहा, तो वहाँ की जनता आंदोलन धर्मी कुशल नेतृत्व में प्रतिरोध में खडी हो गयी। बस यही से लोगों को SEZ का राजनीति समझ में आने लगी, अन्यथा तो उसकी निर्माण प्रक्रिया पूरे देश में रफ्ता-रफ्ता चल रहा था।

डॉ. महावीर वत्स ने ठीक ही कहा है कि जब तक व्यवस्था को नहीं बदलता जाता तब तक खून पसीना बहनेवाली जनता आराम से जीवन यापन नहीं कर सकती। सर्वहारा वर्ग आर्थिक अभाव के कारण बेकार एवं गूँगे जैसे दिखाई देते हैं। आर्थिक संकट के मूल कारणों पर विचार करते हुए कैलाश वाजपेयी लिखते हैं कि बढ़ते आर्थिक संकट से आज देश की अर्थ व्यवस्था लड़खडा रही है। विकास की मन्द गति, आवश्यक वस्तुओं का अभाव एवं आस्मान छूती कीमत निश्चित रूप से आर्थिक संकट का द्योतक है। यहाँ आर्थिक परिवर्तन की गुंजाईश इसलिए है कि गरीबी की समस्या, बेरोज़गारी, पेयजल, आवासीय समस्या, खाद्य

पदार्थों की कमी, प्रदूषण आदि इसके तहत हल होंगे। क्योंकि आर्थिक परिवर्तन की आवश्यकता युग धर्म बन गयी है। अर्थ का समुचित वितरण होने पर सामाजिक समरसता आ जाती है।

1.10 समकालीनता का साहित्य

आधुनिकता की अगली कडी है समकालीनता। समय की सच्चाई को तटस्थता के साथ देखने की क्षमता किसी को समकालीन बनाती है। "समकालीनता वर्तमान जीवन प्रणाली की जटिलता को उसकी पूरी समग्रता में सूक्ष्मता के साथ व्याख्यायित, परिमार्जित एवं प्रतिक्रियान्वित करनेवाली गहरी समझ का नाम है।"[1] इस गहरी समझ के ज़रिए समकालीनता आदमी-आदमी को जोडती है। फलस्वरूप यह मानव कल्याण की भावना को तीव्र बनाती है।

समकालीनता को अर्जित करने के लिए रचनाकार को जागरूक होना चाहिए। क्योंकि असंगतियों के बीच पडकर तडपने एवं दिशाहीन लोगों को केन्द्र में रखकर विचार विमर्श करने की जिम्मेदारी रचनाकारों में होती है। चाक्रिक प्रक्रिया होने के नाते इसमें अतीत वर्तमान एवं भविष्य की गुंजाईश है। भविष्य की ओर अधिक चिंता होने के कारण निसंदेह कहा जा सकता है कि समकालीनता नवप्रगतिशील प्रक्रिया है। लेकिन ध्यान देने की बात यह है कि किसी राजनीतिक दल एवं किसी विचारधारा से प्रेरित नहीं है समकालीनता। फिर भी समकालीनता में राजनीतिक, सामाजिक एवं सांस्कृतिक विशाल समझ का बडा कैन्वास है।

---

1. डॉ. एन. मोहनन - समकालीन हिन्दी उपन्यास - पृ. 21

पश्चिम में आधुनिकता का प्रतिफलन सभी स्तरों में दिखाई पड रहा था। वास्तव में आधुनिकता एक परिवर्तन शील प्रक्रिया है। मार्क्सवादी आलोचक इसे सामाजिक परिवर्तन से जोडकर देखते हैं। डॉ. शंभुनाथ सिंह के मुताबिक आधुनिकता का बोध सामाजिक जीवन बोध है, जो समाज के ऐतिहासिक विकास क्रम के विभिन्न आयामों से जुडा होता है। सामाजिक चेतना की गहराई और विस्तार का प्रामाणिक और संवेदनात्मक आलेखन ही साहित्य की आधुनिकता हो सकता है।"[1] वे आधुनिकता को समाज से संपृक्त करते हैं। अज्ञेय की नज़रिया भी इसी संदर्भ में विचारणीय है। अज्ञेय के मुताबिक - "आधुनिकता है तो संवेदन का एक नया आयाम है - काल के साथ एक नया संबन्ध है - निरा ऐतिहासिक संबन्ध नहीं एक आनुभाविक और अस्तित्विक संबन्ध।"[2]

आधुनिकता में युग सम्मत जीवन मूल्यों की स्थापना होती है। वहाँ पुरातन समय-बाह्य मूल्यों की कोई गुंजाइश नहीं, इसका संस्कार की पुनरावृत्ति होती है। शंभुनाथ का वक्तव्य अधिक समीचीन होगा - "आधुनिकता अपने समाज का युगानुरूप संस्कार करती हुई पुरातन पड गये समय-बाह्य मूल्यों को नकारकर युग सम्मत-जीवन मूल्यों की स्थापना का ईमानदार प्रयत्न करती है। कालान्तर में यही मूल्य हमारी परंपरा का अंग बन जाता है। आगामी युग की आधुनिकतापूर्ण दृष्टि पुनः उस परम्परा का संस्कार कर नये जीवन मूल्य स्थापित करती है। आधुनिकता

---

1. कृष्णदत्त पालीवाल - आधुनिकता संवेदना और संप्रेषण - पृ. 27
2. वही - पृ. 27

एक सतत प्रक्रिया है जो हर युग में किसी न किसी रूप में विद्यमान रहती है।"[1] आज यह सतत प्रक्रिया विचारधारा से बढ़कर हमारे रहन सहन की दृष्टि में अपसंस्कृति में तब्दील हुई। डॉ. कुमार विकल के शब्दों में शब्द मिलाकर कहा जा सकता है कि विचार भी नहीं, सामाजिक रहन-सहन की दृष्टि से भी 'आधुनिकता' का अर्थ है 'पश्चिमी रंग में रंगना'।

समकालीनता में पुराना मानवतावाद ध्वस्त होकर 'अस्मिता' की खोज एवं स्थानीयता की खोज है। डॉ. वनजा के मुताबिक - "....पुराना मानवतावाद ध्वस्त हो जाता है क्योंकि इसमें 'अस्मिता' की खोज होती है जो 'आत्मा' को अन्यों के दमन से होती है। उसमें दलित, स्त्री, आदिवासी आते हैं।"[2] दूसरे शब्दों में कहा जाये तो समकालीनता में महानता का विदाई देकर बहुलता को स्वर मिलता है। ध्वंसात्मक प्रवृत्ति समकालीनता को आधुनिकता से अलग करती है। आधुनिकता में बुद्धिजीवी बहुत सारी बातें जैसे धर्म से विज्ञान, स्त्री से पुरुष, बच्चे से प्रौढ़ की श्रेष्ठता के प्रति विचार रखते हैं। लेकिन समकालीनता में ऐसी निश्चिंतता को स्थान नहीं। इसी से पता चलता है कि समकालीनता में बुद्धिजीवि वर्ग अपने विधिकर्ता के व्यवहार से विचलित होकर सांस्कृतिक परंपरा का टीकाकार बन गये।

समकालीनता आधुनिकता की सभी मान्यताओं को अस्वीकार करती है। जैसे स्व एवं व्यक्ति निष्ठता के अनुमान को इतिहास की नई समालोचना और

---

1. कल्पना - अगस्त-सितंबर 1969 - पृ. 17
2. डॉ. के. वनजा - हरित भाषा वैज्ञानिक विमर्श - पृ. 15

सबसे बढकर विश्व को नकारती है। याने कि अनुभवातीत प्रदर्शनों की अस्वीकृति है इसमें। वास्तव में इसी अस्वीकृति ने ही समकालीन रचनाकारों को आधुनिक रचनाकारों से अलग रखा। दोनों रचनाकारों की तुलना करके डॉ. नरेन्द्र मोहन का वक्तव्य अधिक समीचीन होगा - "समकालीन लेखक आज की तत्कालिकता से परिचालित होते हैं जबकि आधुनिक लेखक समकालीन परिदृश्य के प्रति सजग और संवेदनशील होते हुए भी समकालीन मूल्यों को चरम और अंतिम नहीं मानते।"[1]

समकालीन साहित्य सांस्कृतिक विमर्श है। नव्यमार्क्सवादी विचारक जैसे ग्राम्शी, रेमेंड विल्यंस जैसे चिंतकों ने मार्क्सवाद को संस्कृति एवं भूगोल से जोडकर नया आयाम प्रदान किया। ग्रामीण संस्कृति के साथ दलितों एवं हाशियेकृतों के बोलने के अधिकार पर भी प्रकाश डाला गया। वैसे ही मिखाइल फूको के चिंतन में आधुनिकता की समीक्षा करते हुए समकालीनता के विविधायामी स्वरों की पुष्टि हुई। सचमुच उन्होंने विमर्श (Discourse) की ओर हमारा ध्यान आकृष्ट किया। उनसे प्रेरित और बाद में उनसे भिन्न सांस्कृतिक विचारों के ज़रिए समकालीन साहित्य की प्रतिरोधी संस्कृति को साहित्य जगत में प्रतिष्ठित कर सांस्कृतिक बहुलता का पोषण किया Orientilism के रचयिता एडवेर्ड सेईद ने। पूर्वात्य संस्कार के प्रति यूरोपीय संकुचित दृष्टि का अनावरण किया गया। इसके फलस्वरूप अपनी अपनी संस्कृतियों की महानता और लघुसंस्कृतियाँ केन्द्रीय संस्कृति बनने

---

1. डॉ. नरेन्द्र मोहन - आधुनिकता और समकालीनता का रचना संदर्भ - पृ. 22

की स्थिति उत्पन्न हुई। एडवेर्ड सईद के अनुसार प्राच्यवाद एवं स्वदेशीवाद से उभरकर एक बहुलता की स्थिति पैदा कर प्रतिरोध में एक संधि बनाना अनिवार्य है।

भारतीय साहित्य में समकालीनता में पोषक के रूप में उपर्युक्त सारे विचार सहायक हुए हैं तो भी हमारी मिट्टी से जन्म लेकर लंबे समय तक उसी की छाया में लडकर हमारे मुक्तिमोह को सफल बनाने में जो गाँधीचिंतन सहायक हुआ वह इस समकालीनता का सबसे योग्य समझना सबसे उचित है। गाँधी द्वारा रचित 'हिन्द स्वराज' को समकालीनता का बाइबिल कहा जाए तो कोई अतिशयोक्ति नहीं है। इस बहुलता की संस्कृति में प्रत्येक की संस्कृति की सुरक्षा और उन सभी से निर्मित एक राष्ट्र का रूपायन सबसे मुख्य मुद्दा है। इसलिए साहित्य जगत में विमर्शों की रूपायिति हुई, इन लघुसंस्कृतियों को बनाने के लिए।

1.11 विमर्श

विमर्श को अंग्रेजी में 'डिस्कोर्ज' कहा जाता है। इसका अर्थ हैं विवेचन, समीक्षा, पर्यालोचना एवं तथ्यानुसंधान आदि। "Discourse is a conceptual generalization of conversation with each modality and context of communication"[1] अर्थात इसका लक्ष्य यह है कि संवादों के द्वारा गुणदोष की आलोचना या विवेचन करना है। यहाँ ध्यान देने की बात यह है कि विचार या विवेचना तार्किक ढंग से होता है। इससे स्त्री, आदिवासी, दलित, अन्य हाशिएकृतों

---

1. https//in.m.wikipedia.org

के मानवाधिकार के मुद्दे उठाये जाते हैं। तभी तो विमर्श बहुलता का विमर्श बनता है। प्रत्येक की सच्चाई की आवाज़ उसमें बुलंद है।

1.12 समकालीन साहित्य की प्रवृत्तियाँ

1.12.1 भूमंडलीय संस्कृति की चुनौतियाँ

समकालीन परिवेश पर नज़र डाले तो निस्संदेह कहा जा सकता है कि भूमंडलीकरण ने सांस्कृतिक-सामाजिक, राजनैतिक एवं आर्थिक क्षेत्रों पर हस्ताक्षेप करके विदेशी मंडी में तब्दील किया है। इस प्रकार की समसामायिक घटनाओं और मानव जीवन के अनेकानेक पक्षों के हू-ब-हू चित्रण व्यक्त करने की क्षमता आज साहित्य में दिखाई पड़ती है। साहित्यकार अपने परिवेश से जुड़कर साहित्य का सृजन करते हैं। समय एवं परिवेश से जो साहित्यकार दूर होते हैं तो उनका मूल्य भी नहीं होता। साहित्यकार के दायित्व पर हज़ारी प्रसाद द्विवेदी का कथन देखिए - "मैं साहित्य को मनुष्य की दृष्टि से देखने का पक्षपाती हूँ। जो वाग्जाल मनुष्य को दुर्गति, हीनता और परमुखोपाक्षिता से बचा सके, जो उसकी आत्मा को तेजोद्दीप्त न बना सके, जो उसके हृदय को परदुःखकातर और संवेदनशील न बना सके, उसे साहित्य कहने में मुझे संकोच होता है।"[1] हमें इसी कथन से यह भी स्पष्ट होता है कि समाज से जुडनेवाले साहित्यकार एवं उसकी रचना भी कालजयी होगी। इसी दृष्टि से देखे जाये तो समकालीन साहित्य, समसामयिक चुनौतियों को लेकर

---

1. हज़ारी प्रसाद द्विवेदी - अशोक के फूल - पृ. 148

प्रवाह की तरह चल रहा हैं। क्योंकि समकालीन रचनाकार किसी विचारधारा या दर्शन विशेष के चश्मे से न देखकर स्वयं की सामान्य दृष्टि से परिवेश को देखता-परखता है। कहने का मतलब यह है कि समकालीनता में किसी एक विचारधारा का महत्व नहीं, सभी विचारधाराओं को अपना-अपना स्थान होता है। फलस्वरूप समकालीनता में बहुलता का स्वर आ गया। इसी बहुलतावादी स्वर से अन्य लोगों के बारे में विचार-विमर्श चलता है। यहाँ अन्य लोगों से तात्पर्य है दलित, स्त्री, आदिवासी, अल्प संख्यक, आदि। इन्हीं लोगों की अस्मिता की तलाश समकालीन रचनाओं एवं रचनाकारों का शर्त होता है। साथ ही साथ उपभोग संस्कृति का प्रतिरोध, स्थानीयता बोध, केन्द्रियता का विखण्डन और बहुलता, मनुष्य केन्द्रित प्रगति के स्थान पर प्रकृति केंद्रित विकास, अनुभूतियों की वापसी, धार्मिक पहचान, राष्ट्रवाद जैसे समकालीनता की प्रवृत्तियों को हमारे सामने पेश करके आज के माहौल के प्रति जनता को जागरूक बनाकर अपनी संस्कृति, जीवन शैली एवं अस्मिता को सुरक्षित रखने के लिए प्रतिरोध रूपी भाषा का प्रयोग समकालीन रचनाकार करता है।

इक्कीसवीं सदी के बारे में प्रभाकर श्रोत्रिय का कथन सराहनीय है कि अपनी शती की ओर हम कई संभावनाओं, आशंकाओं और प्रश्नों से देख रहे हैं। ये प्रश्न विज्ञान, विचार, राजनीति, अर्थ शास्त्र, जाति, धर्म, पर्यावरण, सूचना प्रौद्योगिकी, कला, संस्कृति, हमारी मिट्टी, हमारी जनता से जुडे हैं और ये सभी चीज़ें साहित्य से जुड़ी हैं क्योंकि इन सब तत्वों एवं उत्पादनों से साहित्य अपना

कथ्य एवं प्राणवायु अपनी जनता से या मिट्टी से चुन लेता है। इक्कीसवीं सदी के प्रारंभ के साथ मानव समाज ने विकास के एक नवीनतम युग में प्रवेश किया, जिसे भूमंडलीकरण का युग कहा जाता है। कोई भी क्षेत्र इसके प्रभाव से बचा नहीं। भूमंडलीकरण के संबन्ध में मैनेजर पांडे का विचार देखिए - "भूमंडलीकरण शब्द नया है लेकिन वह जिस प्रक्रिया को व्यक्त करता है वह पुरानी है, कार्ल मार्कस ने पूँजीवाद की बुनियादि विशेषता यह बतायी थी कि वह सारी दुनिया में अपना विस्तार करता है। यह प्रक्रिया यूरोप में पूँजीवाद के जन्म के साथ शुरू हो गयी थी। लेकिन इस प्रक्रिया की दो अवस्थाएँ हैं। पहली अवस्था साम्राज्यवाद या उपनिवेशवाद की थी जिसका सामना भारत ने ब्रिटीश के रूप में किया था। दूसरी अवस्था विशेष रूप से सोवियत संघ के विघटन के बाद की है जब पूँजीवादी देशों के लिए यह संभव हो गया कि वे दूसरे देशों में जाकर अपने उपनिवेश कायम किये बिना अपने साम्राज्य का विस्तार कर सकें। दूसरी अवस्था का नाम है 'भूमंडलीकरण'।"[1] साम्राज्यवाद का नया रूप ही है भूमंडलीकरण।

भूमंडलीकरण ने हमारी भूमि को 'विश्वग्राम' में तब्दील किया। डॉ. सुधीश पचौरी के अनुसार 'विश्वग्राम' की परिकल्पना मैक्लूहान की है जिन्होंने संचार क्रान्ति के प्रभाव को एक गाँव में बदल लेगा। भूमंडलीकरण की प्रक्रिया के वाहक है बहुराष्ट्रीय निगम। वित्तीय और आर्थिक नियंत्रण के लिए गठित हुआ अंतर्राष्ट्रीय मुद्रा कोश, विश्व बैंक, विश्व व्यापार संगठन, बहुराष्ट्रीय कंपनियाँ, ब्रेटन वुड्स और गाट समझौता आदि भूमंडलीकरण को आगे बढाता है। पूँजी के इस सट्टे के

---

1. मधुमती - अप्रैल 2006 - पृ. 63

कारण दुनिया के तमाम देशों की अर्थ व्यवस्थाएँ लगातार डंवाडोल चल रही हैं और चारों तरफ भय अनिश्चिंतता का महौल बन हुआ है।

डॉ. रमाकान्त श्रीवास्तव भूमंडलीकरण से बाज़ारवाद और उपभोक्तावाद का जन्म मानते हैं। उनका कहना है - "भूमंडलीकरण से बाज़ारवाद और उपभोक्तावाद की स्थितियां जन्मी है।"[1] आजकल टी.वी में उपभोक्तावाद का प्रचार हो रहा है। विज्ञापनों तथा विभिन्न कार्यक्रमों के ज़रिए हम लोगों को आकर्षित कर रहे हैं। इसीसे परिवार में यांत्रिक सभ्यता का विकास होता है। उपनिवेश और नवउपनिवेशवाद का कार्य बाज़ार पर टिका है। आज भूमंडलीकरण के ज़रिए प्रत्यक्ष या अप्रत्यक्ष रूप में संस्कृतियों का समरूपीकरण का प्रयास हो रहा है। सारी संस्कृतियों में अपनी कुछ विशेषताएँ मौज़ूद हैं। लेकिन नई संस्कृति की प्रस्तुति नए मूल्य संकट को जन्म देती हैं। नई संस्कृति का बढावा, मीडिया, विज्ञापन व बाज़ार के माध्यम से होता है। इसके तहत हम आधुनिक न बन पाते न सच्चे आदमी।

हिन्दुस्तान का जो मूल्य है वह आज बाज़ार द्वारा निर्धारित बन रहा है। विज्ञापनों एवं विभिन्न कार्य क्रमों के ज़रिए लोग इस मूल्य की ओर आकर्षित हो रहे हैं। इसकी केवल एक ही हकीकत है - पैसा कमाने या सबकुछ बाज़ार में बदलना। हमारा खाना भी बाज़ार तय करता है। बाज़ार की भूख मिटाने के लिए हम खा रहे हैं। आज पोषण युक्त भोजन के स्थान पर फास्ट फुड प्रतिष्ठित हो गया। हमारे पहनावे में बदलाव आ गया। किसी ग्लोबल ब्रांड से जुडे कपडों को स्टाटस के

---

1. मधुमती - अप्रैल 2006 - पृ. 63

सिंबल के रूप में हम पहनते हैं। दूसरे शब्दों में कहा जाये तो स्वदेशी वस्त्रों का बहिष्कार एवं विदेशी वस्त्रों का नमन हो रहा है।

अपसंस्कृति की आड में सांस्कृतिक शोषण हो रही है। इस षड्यंत्र को अपनाने के सिवाय और कोई रास्ता नहीं। समकालीन रचनाकार अपनी रचनाओं के माध्यम से भूमंडलीकरण की अमानवीय एवं षड्यंत्रकारी प्रवृत्तियों पर विचार करके उसके प्रति प्रतिरोध जाहिर करते हैं। कहानी के क्षेत्र में पंकज बिष्ट, संजीव, कैलाश वनवासी, मुद्रा राक्षस आदि का नाम उल्लेखनीय हैं। कविता के क्षेत्र में लीलाधर मंडलोई, हेमन्द कुकरेती, राजेश जोशी, संजीव गुप्त आदि चर्चा में ज़्यादा आये। उपन्यास के क्षेत्र में विनोद कुमार शुक्ल, रवीन्द्र वर्मा, सुरेन्द्र वर्मा, दूधनाथ सिंह, नासिरा शर्मा, काशीनाथ सिंह एवं नाटकों के क्षेत्र में असहर वजाहत, नागबोडन आदि प्रमुख हैं। हम एक बेहतर दुनिया चाहते हैं लेकिन इसके लिए ठोस प्रयत्नों की ज़रूरत है, सुस्पष्ट राजनैतिक कार्यक्रमों की जरूरत है, सपने बेचनेवालों के झांसे से यदि नहीं बचे तो आगे चलकर और दुःख पाएँगे। यही पहचान प्रस्तुत रचनाकारों ने उठायी है। मात्र नहीं भूमंडलीकरण के हानीकारक तत्वों को चुनौती देकर रचना करते हैं। जनसंवेदना को झकझोरने की ताकत समकालीन रचनाकारों की कलम में हैं।

1.12.2 स्त्री विमर्श

जब हम मानव शब्द का प्रयोग करते हैं तब उसमें स्त्री एवं पुरुष दोनों का बराबर स्थान हैं। लेकिन समाज में पुरुष ने महामानव का रूप धारण किया।

फलस्वरूप समाज पितृसत्तात्मक समाज बन गया। पितृसत्तात्मक समाज ने स्त्री को देह की परिधि में देखा। याने कि भोग की वस्तु मात्र मानी गयी है। घरों में, दफ्तरों में, आस्पतालों में, स्कूलों में, गाडियों में सब कहीं स्त्रियों पर अत्याचार हो रहे हैं। पितृसत्ता ने इस तरह स्त्री को आत्म हीन, स्वत्वहीन एवं वाणीहीन बनाया। याने कि उनकी अस्मिता को उन्होंने दबाया था। शिक्षा के ज़रिए वे अपने स्वत्व को पहचान लिया। स्त्री एवं पुरुष दोनों समाज में समान अधिकार के हकदार हैं। इसी पहचान से स्त्री अपनी अस्मिता को बनाये रखने के लिए पुरुष वर्चस्ववादी समाज से संघर्ष करती है। वास्तव में यह है नारी विमर्श। वेबर्स्टर्स डिक्शनरी में कहा है - "Feminism is the theory of the political, economic and social equality of the sexes. It is an organised activity on behalf of women's rights and interests"[1] अर्थात स्त्री की राजनैतिक, सांस्कृतिक एवं आर्थिक स्थिति के व्यापक दृष्टिकोण का विमर्श है, स्त्री विमर्श। स्त्री-विमर्श स्त्रियों का शुक्ल पक्ष है। इसके संबन्ध में सूर्यबाला कहती हैं - स्त्रियों ने अपनी दुर्दशा सुनी तो देहत्थड मार कर रो पडी। लेकिन जैसा कि इस शोक पक्ष को सदा के लिए समाप्त करने के लिए स्त्री विमर्श रूपी शुक्ल पक्ष की अवतरणा हुई। अब तक यह बात स्त्रियों को बतायी जा चुकी थी और उन्होंने मान भी लिया था कि स्त्री पैदा नहीं होती। बनायी जाती है।"[2]

---

1. www.yahoo.com
2. सूर्यबाला - नई धारा - अक्तूबर-नवंबर - पृ. 31

स्त्री विमर्श की पृष्ट भूमि पाश्चात्य में है। वहाँ समान अधिकार का नारा लेकर स्त्री मुक्ति आन्दोलन की शुरुआत हुई। पाश्चात्य देशों में स्त्रियों की स्थिति शोचनीय थी। इसी शोचनीय स्थिति से प्रेरणा पाकर 1949 में 'द सेंकड सेक्स' लिखकर सिमोन द बुआ ने नारी मुक्ति आंदोलन को नया रूप दिखाया। 1966 में 'द फेमिनिन मिस्टिक' लिखकर बेट्टी-फ्राइडन ने स्त्रियों को असंतोष के असंतोष को शब्दबद्ध किया। नारी मुक्ति आन्दोलन की प्रेरणा बनी अन्य पुस्तकों में वर्जीनिया वुल्फ का 'अपना कमरा' (A room of one's own) जर्मन ग्रियर का 'द फीमेल यूनक' (The Female Eunech) आदि विशेषतः लेखनीय है।

हिन्दी साहित्य में 70 के आसपास स्त्री मुक्ति आंदोलन की शुरुआत हुई। महादेवी वर्मा की रचनाओं में स्त्री विमर्श की नज़रिया हम देख सकते हैं। उनके मुताबिक - "चाहे हिन्दू नारी की गौरव गाथा से आकाश गूँजे रह हो, चाहे उसके पतन से पाताल कॉप उठा हो, परन्तु उसके लिए 'न सावन सूखें न भादों हरे' की कहावत ही चरितार्थ होती रही है। उसे अपने हिमालय को लजा देनेवाले उत्कर्ष तथा पाताल समुद्रतल की गहराई से स्पर्धा करनेवाले अपकर्ष दोनों का इतिहास आँसुओं से लिखना पडा है और संभव है भविष्य में भी लिखना पडे। प्राचीनता से प्राचीनतम काल में जब उसे त्याग, संयम तथा आत्मदान की आग में अपना सारा व्यक्तित्व, सारी सजीवता और मनुष्योचित स्वभावोचित इच्छाओं तिल तिल गलाकर उन्हें कठोर आदर्श के साँचे में ढालकर एक देवता की मूर्ति गढ डाली तब भी क्या संसार विस्मित हुआ पर मनुष्यता कातर हुई।"[1] अर्थात् स्त्रियों ने पुरुष द्वारा

---

1. महादेवी वर्मा - श्रृंखला की कडियाँ - पृ. 32

निर्धारित एवं शताब्दियों से उसके पास सुरक्षित करनेवाले संहिता को तोड़ने का आह्वान वे देती हैं। फलस्वरूप स्त्रियाँ पुरुषों के साथ कंधों से कंधा मिलाकर आगे की ओर बढ रही है। समाज के सभी क्षेत्रों में आज स्त्री समान अधिकार की माँग करती है। फिर भी उनको एक लंबी यात्रा तय करनी बाकी है। स्त्री संबन्धी विभिन्न समस्याओं को खुलकर पेश करने में समकालीन रचनाकार सक्षम निकले हैं।

समकालीन हिन्दी साहित्य स्त्रियों के दमन, उत्पीडन एवं अन्य शोषणों के प्रति सजग है। कविता के क्षेत्र में विमलकुमार, वंदना मिश्र, अनिता वर्मा, रघुवंशी, निर्मला पुतुल, कात्यायनी, मदन कश्यप, अनामिका, अर्चना वर्मा आदि का नाम उल्लेखनीय है। कहानी के क्षेत्र में अलका सरावगी, मृणाल पाण्डे, मैत्रेयी पुष्पा, मंजुल भगत, नासिरा शर्मा, राजी सेठ, चित्रा मुद्गल, सूर्यबाला, इंदिरा दागी, मनीषा कुलश्रेष्ठ, कल्पना मिश्रा आदि का नाम चर्चा में ज़्यादा आया। उपन्यास के क्षेत्र में मैत्रेयी पुष्पा, कृष्णा सोबती, मृदुला गर्ग, नासिरा शर्मा, गीतांजलीश्री, अलका सरावगी, स्त्री को केन्द्र में रखकर रचनाकार्य करती आ रही है।

समकालीन रचनाकार अपनी रचनाओं के द्वारा मनु की संहिता को फेंककर मानवीय संहिता को बनाया रखते हैं। साथ ही साथ सहमानव के रूप में स्त्री को स्थान देने का सक्रिय प्रयत्न अपनी रचनाओं के द्वारा करते हैं।

1.12.3 दलित विमर्श

हिन्दी साहित्य में स्त्री विमर्श के साथ ही दलित साहित्य आया। दलित शब्द का अर्थ यह है कि जिसका दलन, दमन दबाया गया, उत्पीडन, शोषित-वंचित

एवं सताया हुआ। सदियों से छोडा गया वर्ग है दलित। वे हर प्रकार के शोषण के शिकार बनते आ रहे हैं। उनको मानवोचित मान्यता नहीं मिल रही है। दलित विमर्श जातिवाद की कट्टरता से उत्पन्न है। अम्बेदकर जी ने दलित जाति का स्वरूप इस प्रकार दिया है कि दलित जातियाँ वे हैं, जो अपवित्र होती हैं। इनमें निम्न श्रेणी के कारीगर, धोबी, मोची, भंगी, बसौर सेवक जातियाँ जैसे चमार, गँगरी (मरे पशु उठानेवाले) सुहरी (प्रसूति गृहकार्य के लिए ठोल जकली बजानेवाले) आदि आते हैं। जाति-व्यवस्था में (शूद्र, ब्राह्मण, क्षत्रिय, वैश्य एवं शूद्र) प्रथम दो वर्ण समाज में अपनी हैसियत रखते हैं। शूद्र सवर्णों द्वारा तिरस्कृत है। अम्बेदकर ने साफ-साफ बताया है कि दलितों के दो दुश्मन हैं, वै हैं ब्राह्मणवाद एवं पूँजीवाद। जाति-भेद के सभी प्रकार की भीषणताओं को भोगनेवाला निम्न तबके के लोग हैं दलित। समकालीन साहित्य में दलितों को आवाज़ मिली है। याने कि समकालीन साहित्य दलितों की आत्मपहचान का साहित्य है।

दलित साहित्य का लक्ष्य क्या है? इस पर विचार करें तो हमें पता है कि समान अधिकार, समान हक, एवं अन्य क्षेत्रों में समान अवसर देकर सामान्य मानव के रूप में जीने का अवसर देना है। रमणिका गुप्ता दलित साहित्य के लक्ष्य पर यों विचार करती हैं - "दलित साहित्य का लक्ष्य सबको समान हक, समान शिक्षा, पेशा चुनने का समान अवसर और अधिकार तथा बोलने की आज़ादी सत्ता में समान भागीदारी, निर्णायक भूमिका में समान अवसर एवं स्थान दिलाकर एक जातिविहीन समाज का निर्माण करना।"[1] अर्थात दलित साहित्य भारत के वर्णहीन

---

1. रमणिका गुप्ता - साहित्य एवं सामाजिक सरोकार - पृ. 65

भविष्य का दरवाजा है। दलित साहित्य के संबन्ध में दो मत प्रचलित हैं। एक तो दलितों द्वारा लिखे गये साहित्य को दलित साहित्य माना जाता है, दूसरा गैर दलित द्वारा लिखे गये साहित्य को दलित साहित्य माना है। जो भी हो दोनों में प्रतिरोध की भावना है और नयी सदी की आकांक्षा है। विश्वनाथ त्रिपाठी दलित समाज के उत्कर्ष को एक ओर उगते सूरज की तरह हौसला देते हैं। दलित साहित्य का सौंदर्य परंपरा के प्रहार में हैं। वे सडी-गली परंपरा को अनदेखा करके अन्याय, अत्याचार एवं शोषण के खिलाफ लडने का आह्वान देते हैं। तोडने-मरोडने एवं गिरने-गिराने की आवाज़ की धडकन है दलित साहित्य।

समकालीन हिन्दी साहित्य में दलितों को नयी आवाज़ देनेवाले कहानीकारों में सूरजपाल चौहान, हृदयेश, ममता कालिया, स्वयं प्रकाश आदि का नाम उल्लेखनीय है। कविता के क्षेत्र में मोहनदास नैमिशराय, ओमप्रकाश वात्मीकी, सूरजपाल चौहान, जयप्रकाश कर्दम आदि चर्चा में ज़्यादा आये। उपन्यास के क्षेत्र में प्रेम कपाडिया, जयप्रकाश कर्दम, कौसल्या बैसन्त्री आदि उल्लेखनीय है। नाटक में माता प्रसाद, सुशीला टाक भौरे आदि का नाम चर्चित है। वास्तव में इन रचनाकारों ने दलित विमर्श की रचनात्मकता को कई प्रकार से नए आयाम दिए हैं।

सारांश यह है कि दलित साहित्य की अनुभूति दर्द की है। इसलिए यह दर्द के ऊपर प्रश्न चिह्न लगाकर समता के प्रति आग्रह व्यक्त करता है। दलित साहित्य का लक्ष्य यह है कि दलित होने की स्थिति को नष्ट करना।

1.12.4 आदिवासी विमर्श

आदिवासी जनता को पहले दलितों के अंतर्गत माना जाता था। आज आदिवासी दलित से भिन्न पहचान रखनेवाला है। क्योंकि आदिवासी एक अलग संस्कृति का है। वह समाज से दूर होकर जंगल की गोद में जी रहा है। वे प्रकृति की आपदा को सहता है, लेकिन मैदानी लोगों की तरह प्रकृति को नष्ट नहीं करता। आज भूमंडलीकरण तथा अन्य हस्ताक्षेपों की वजह से वह विस्थापित होता जा रहा है। रमणिका गुप्ता के अनुसार - "विकास के नाम पर विस्थापित कर जंगल और जल से वंचित कर उसे जंगलों से बाहर खदेडा जा रहा है। दरअसल आदिवासी अपने श्रम के बल पर सदैव आत्मनिर्भर और स्वावलंबी रहा है। वह प्रकृति से संवाद करता चलता है, उसका सहयात्री है, गाय की तरह वह पोस्ता और दुहता है।"[1] अर्थात प्रकृति को अपने कब्जे में रखना वे चाहते नहीं, मित्र बना देते हैं। आज़ादी के बाद भी आदिवासी जनजातीय समुदाय विकास के पथ से कोसों दूर है, जंगलों में भटक रहा है। विकास का कोई बुनियादी ढाँचा आज नहीं है। आज आदिवासी साहित्यकार भोगे हुए अनुभवों को साहित्य में उकेरने का प्रयास कर रहे हैं। दूसरे शब्दों में कहा जाये तो सदियों से हमने जिन आदिवासियों को साहित्य एवं समाज से दूर रखा, वे अपनी मुक्ति के लिए आज साहित्य में प्रवेश कर रहे हैं। अपने हक की लडाई वे करते हैं। लडाई पारम्परिक हथियार तीर और कमान से ज़्यादा तेज कलम से है।

---

1. रमणिका गुप्ता - आदिवासी स्वर और नयी शताब्दी - पृ. 8

आदिवासी बडे पैमाने पर कवितायें लिखा आ रहा है। उसमें हरिराम मीणा की सुबह के इन्तजार में, 'समकालीन आदिवासी कविता संग्रह, बदखल होते हुए निर्मला पुतुल की 'नगाडे की तरह बजे शब्द', अपने घर की तलाश में रामदयाल मुण्डा की 'वापसी', 'पुनर्मिलन', 'अन्य गीत तथा नदी और उसके संबन्धी अन्य गीत', लक्ष्मीनारायण पयोधि की 'सोमरु', 'चिन्तनार से चिन्तलनार तक', संजीव बख्सी की 'मौहाझाड को लाइफ-ट्री कहते हैं जयदेव बहोल', अनुज लुगुन 'उलगुलान की आँखें', गेज कुजूर की 'एक और जनी शिकार' आदि उल्लेखनीय है। कथा साहित्य में मेहरुन्निसा परवेज का 'टोना', विजय का 'जंगल का सपना', सजीव का 'दुनिया', अरुण प्रकाश का 'बेला एक्का लौट रही है' मनीषा राय का 'शिलान्यास', राकेश वत्स का 'अवशेष', कैलाश वनवासी का 'सुरक्षित असुरक्षित', संजीव का 'प्रेतमुक्ति', 'आप यहाँ है', 'भूमिका', 'घर चलो दुलारीबाई', रणेन्द्र का 'ग्लोबल गाँव का देवता', वीरेन्द्र जैन का 'डूब', पीटर पॉल एक्का 'जंगल के गीत', हरिराम मीणा 'धूजी तपे तीर', मंगल सिंह मुण्डा 'आशिक संदु', 'वाल्टर भेंगरा 'तरुण', 'रोज केरकेट्टा 'भंवर', डॉ. मजू ज्योत्सना 'प्रायश्चित', शंकर मीणा 'आखिर कब तक', केदार प्रसाद मीणा 'कॉमरेड मीणा', सुनिल कुमार 'सुमन', 'एक बार फिर' आदि रचनाएँ उल्लेखनीय हैं।

इन सारी रचनाओं के तहत आदिवासी जीवन की समस्याएँ, संघर्ष, संस्कृति, एवं उनके जीवन संबन्धी भावनाओं को वाणी मिली है। उनमें आदिवासियों के जीवन की गतिविगतियों का पर्दाफाश भी हुआ है।

1.12.5 पारिस्थितिक विमर्श

प्रकृति और मनुष्य का संबन्ध बहुत ही पुराना है। आज औद्योगीकरण, बाज़ारवाद और भूमंडलीकरण के नाते मानव एवं प्रकृति के बीच का रिश्ता बिगड रहा है। विकास के तहत जंगल को कटकर खेत, गाँव एवं नगर बनाए जा रहे हैं। इससे उत्पन्न होनेवाला जैविक संकट विचारणीय है। इस अवसर पर रामचन्द्र शुक्ल जी का वक्तव्य समीचीन होगा - "मनुष्य सारी पृथ्वी छेकता चला जा रहा है। जंगल कट-कट खेत, गाँव और नगर बनाती जा रहे हैं। पशु पक्षियों का भाग छिनता जा रहा है। वे कहाँ जाएँ?"[1]

जनसंख्या की वृद्धि के कारण प्रदूषण बढ़ता जा रहा है। आज पर्यावरण प्रदूषण मुख्य समस्या बन गया है। खाद्य पदार्थों के उत्पादन को बढाने हेतु रासायनिक पदार्थों का उपयोग हुआ है। फलस्वरूप पृथ्वी की उर्वरता नष्ट हुई। भूमि रासायनिक, पदार्थों का खजाना बन गयी। अनेक नए रोग यहाँ उत्पन्न हुए, अनेक लोग मारे गये। इस अवसर पर डॉ. वनजा का वक्तव्य अधिक समीचीन होगा - "जो प्रकृति हमारे रक्षक है, हमारी संपदा का मूलाधार है उसका शोषण आज हो रहा है। इसकी मुख्य वजह मनुष्य की लालच है। प्रकृति के शोषण के साथ जल और वायु को भी विषलिप्त किया जाता है।"[2] इस पारिस्थितिक विनाश के विरुद्ध समकालीन साहित्यकार सजग हुए। उन्होंने लगभग सभी साहित्यिक विधाओं के ज़रिए अपनी इस सजगता को ज़ाहिर किया है।

---

1. रामचन्द्र तिवारी - कविता क्या है - रामचन्द्र शुक्ल संचयिता - पृ. 123
2. डॉ. के. वनजा - हिन्दी उपन्यास आज - पृ. 13

कविता के क्षेत्र में ज्ञानेन्द्रपति, वीरेन डंगवाल, ऋतुराज, निलय उपाध्याय, अरुण कमल, भगवत रावत, एकान्त श्रीवास्तव, राजेश जोशी आदि और उपन्यास के क्षेत्र में संजीव, भगवानदास मोरवाल, कृष्णा अग्निहोत्री, मिथिलेस्वर, चित्रा मुद्गल, मधु कांकरिया, मृदुला गर्ग, स्वयं प्रकाश, अलका सरावगी, गीतांजली श्री जैसे रचनाकारों ने अपनी रचनाओं के द्वारा प्रकृति एवं मनुष्य के बीच के संबन्ध को पुनःस्थापित करने का कार्य किया है। साथ ही साथ आपसी संबन्ध (प्रकृति-मानव) टूटने से होनेवाले आघातों से मनुष्य को अवगत कराने का श्रेय कार्य भी किया जा रहा है।

1.12.6 बालविमर्श

अपसंस्कृति के इस दौर में बालविमर्श की अपनी अहमियत है। यह बच्चों के मनोवैज्ञानिक पठन में निहित है। आज बच्चे अनेक प्रकार की मानसिक पठन में निहित है। आज बच्चे अनेक प्रकार की मानसिक पीडाओं के शिकार बन रहे हैं। उनमें माँ-बाप के बीच के रिश्तों की शिथिलता में तडपनेवाले, बालमज़दूरी जैसी विभीषिकाओं का सामना करनेवाले बच्चे, अनेक अपराधों के गिरा में फँसनेवाले, शिक्षा से वंचित, गरीबी आदि से अकाल में जीने अधिकार से वंचित होनेवाले बच्चे हैं। इस स्थिति में पलनेवाले बच्चों का भविष्य अंधकार में होता हैं। मानसिक तौर पर वे हार जाते हैं। उनकी अवांछनीय इस स्थिति को पहचानते हुए समकालीन रचनाकार अपनी रचनाओं में भविष्य की संभावनायें जिन बच्चों पर आधारित है उनके खिलाफ जो स्थितियों कायम है। उनका पर्दाफाश करने की कोशिश करते

आ रहे हैं। इस क्षेत्र में विशेष उल्लेखनीय रचनाकार हैं - सूर्यबाला, मालती जोशी, विवेकी राय, सरोज वशिष्ठ, राजेश जोशी, संदीप, बलराम आदि।

1.12.7 वृद्ध विमर्श

संयुक्त परिवार के टूटने के फूलस्वरूप एक बहुत बडा समाज अकेलापन का शिकार बन रहा है। वे वृद्धजन हैं। इनके प्रति ध्यान दिलाना और इनकी आवाज़ों को जगह देना समकालीन रचनाओं की अनिवार्यता है। साहित्य का यह नया स्वर वृद्धविमर्श है। इसके तहत घरवालों से तिरस्कृत, अपने बच्चों से तिरस्कृत वृद्धजनों की समस्याओं को वाणी मिली। उनकी समस्याओं को एक हल के रूप में "2004 में उच्चतम न्यायालय को फैसला देना पडा कि वृद्ध माता-पिता की देखभाल की जिम्मेदारी पुत्र-पुत्री पर एक समान है।"[1] लेकिन यह लागू नहीं हुआ। समकालीन रचनाएँ वृद्धजनों की व्यथाओं को चित्रित करते हुए हमें अवगत कराने में सक्षम निकल रही है। उसमें जयप्रकाश कर्दम, संतोष दीक्षित, एकान्त श्रीवास्तव, अलका सरावगी, मृदुला गर्ग, उषा महाजन, कृष्णासोबती आदि का नाम विशेष उल्लेखनीय हैं।

1.12.8 विकलांग विमर्श

संपूर्ण विश्व में व्याप्त मानव जीवन की एक जटिल समस्या है विकलांगत। उसमें अनेक लोग नेत्रहीन, अपंग एवं गूँगे होते हैं। इन लोगों को आश्रय की जरूरत

---

1. प्रो. मान चन्दखेडला - महिला और बदलता सामाजिक परिवेश - पृ. 112

है। आश्रय हीनता इनको मानसिक रूप से विकृत बनाती है। यह वर्ग हम जैसे समाज से दया के बदले सम्मान, समानता एवं प्यार चाहता है। तभी उसमें आगे बढने का आत्मबल मिलता है। इस आत्मबल से उनकी मनोग्रंथि को खोलने एवं उनके दुखों से बाहर लाना समकालीन रचनाकार अपना कर्तव्य समझता है। इस दायरे में आनेवाले रचनाकारों में सूर्यबाला, सुनिल कौशिक, कुलदीप बग्ग, छत्रपाल, सच्चिदानन्द धूमकेतु आदि का नाम उल्लेखनीय हैं। वे अपनी रचनाओं के द्वारा विकलां लोगों की यातनाओं को वाणी देते हैं।

1.12.9 सांप्रदायिकता का प्रतिरोध

भारत जैसे धर्म निरपेक्ष राष्ट्र में आज धर्मान्धता फैलने लगी। वास्तव में इस धर्मान्धता के परिणाम उपजी एक संकीर्ण मानसिकता है सांप्रदायिकता। इसके तहत हिंसा एवं आतंक आज अपनी चरम सीमा तक पहुँच गयी। हर हिस्से में सांप्रदायिक ढंग के रूप में भडकनेवाली हिंसा सांप्रदायिकता की सबसे बडी घृणित अभिव्यक्ति ही है। इसके उदाहरण हैं गुजरात हत्याकांड, बंबई बंम कोर्ड आदि।

देश विभाजन का विष 1947 से लेकर हम देख रहे हैं। एक साथ रहनेवाले समाज सांप्रदायिक दंगे के कारण एक दूसरे के दुश्मन हो रहे हैं। यह स्थिति दल दल में फंसी राजनीति के लिए और भी अधिक लाभदायक सिद्ध हुई है। हमें पता है कि अंग्रेज़ों ने यहाँ की एकता को देखकर फूटो और राज्य करो नीति अपनायी। आज इस नीति ने भ्रष्ट राजनेताओं की स्थिति को और भी मजबूत दिया। सांप्रदायिक बर्बरता इसलिए उतनी मजबूत होती जा रही है कि उसे राजनीति

का प्रश्रय मिलता है। इस अवसर पर देश को प्राण दिलाने का स्वप्न राजनीतिज्ञों पर सौंपना मूर्खता है। यह पहचान हमारे लेखकों की रचनाओं में दर्ज है। इस दायरे में आनेवाले रचनाकारों में अब्दुल बिस्मिल्लाह, महीप सिंह, नमिता सिंह, सुधा अरोडा, अवधेश प्रीतम, भीष्म साहनी, प्रियंवद, गीतांजली श्री, अखिलेश, असगर वजाहत आदि प्रमुख है। वे अपनी रचनाओं में देश और समाज की एकता को बरकरार रखने की कोशिश करते हैं। संक्षेप में कहें तो वृद्ध विमर्श, विकलांग विमर्श, बाल विमर्श, सांप्रदायिकता का प्रतिरोध आदि का सक्रिय सान्निध्य भी समकालीन साहित्य में दर्ज है।

ये सारे विमर्श दरअसल समकालीन समय का सच है इस सच को उजागर करनेवाले रचनाकार है उदय प्रकाश। अतः समकालीन साहित्य में उदय प्रकाश अपनी अलग पहचान रखनेवाले हैं।

1.13 समकालीन साहित्य की भाषा

समकालीन साहित्य की भाषा समकालीन संस्कृति को पूर्णतः अभिव्यक्ति देनेवाली है। समकालीनता का चिह्नशास्त्र है यह। समकालीन रचना को समझने के लिए तथा उनको व्याख्यायित करने के लिए रचना की संरचना को विश्लेषित करना है। भाषा के माध्यम से पाठ की संस्कृति को पहचान किया जा सकता है। भाषा संकेतों की है। इसलिए संकेतों की व्याख्या से आज की प्रतिरोधी संस्कृति में निहित अस्मिता बोध, स्थानीयताबोध, बहुलता का स्वर आदि प्रकट हो जाता है।

इसलिए आज की रचना में भाषा का महत्व पहले से ज़्यादा बढ़ चुका है। आज के साहित्य में भाषाओं का खेल हैं। उदाहरण के रूप में आज स्त्री साहित्य का विश्लेषण स्त्री भाषा के द्वारा किया जाता है, दलित की अपनी भाषा है, आदिवासी साहित्य की भाषा अलग है, पारिस्थितिकी का साहित्य अपनी भाषा में बोलता है। याने कि परिवेश से उपजी प्रतिपक्ष की भाषा है, समकालीनता की भाषा। लेकिन प्रत्येक के संकेतों में फर्क है। इसलिए समकालीन साहित्यकार आक्रोश से अवरोध तक की भाषा के ज़रिए समकालीन परिवेश की बहुकेन्द्रीय और बहुआयामी प्रासंगिकता की व्याख्या देता है। अर्थात समकालीनता की भाषा समझ की भाषा है।

1.14 उदय प्रकाश : व्यक्ति एवं कृतिकार

समकालीन रचनाकारों में उदय प्रकाश खास चर्चित रचनाकार हैं। राजेन्द्र यादव ने कहा है कि उदय प्रकाश बहुत बेजोड साहित्यकार हैं। यदि वे इस समय हिन्दी कथाकारों में कोई एक नाम लेते हैं तो वह है उदय प्रकाश। उदय प्रकाश, कवि, कहानीकार, निबन्धकार, पत्रकार और फिल्म निर्माता के रूप में ख्याति प्राप्त हैं। वे भाषाई कौशल, संवेदन, शीलता, मूल्यों की स्थापना आदि पर सचेत रचनाकार हैं। अपने युग की सत्ता के प्रति, बुराइयों के प्रति हिम्मत के साथ वे अपनी राय प्रकट करते हैं - "....मैं अब किसी राजनीति में नहीं हूँ, मेरी कोई विचारधारा नहीं है, मानव जीवन के प्रति प्रेम मेरे पास है। मैं जनता के सुखों में, दुःखों में शरीक होता हूँ और उन्हीं के बारे में लिखता हूँ।"[1] उनकी रचनाओं में

---

1. उदय प्रकाश - अपनी उनकी बात - पृ. 145

साहित्य एवं जीवन के अनेक पहलुओं का उद्‌घाटन हुआ है। यह एक बानगी है उदय प्रकाश के बहुविध लेखन की जिसमें हम अपनी सभ्यता के उन सभी पक्षों पर विमर्श देख पाते हैं। जिनसे परोक्ष या प्रत्यक्ष रूप से हम प्रभावित होते हैं। सही अर्थ में उदय प्रकाश का लेखन अपने निहितार्थ में एक नैतिक पराक्रम और उससे भी अधिक एक सभ्यता विमर्श है। हमारे समय में इस कृति लेखक का होना अपने आप में सुखद तो है ही, मंगलकारी अकल्मय भी है। उनकी रचनाओं में इतिहास बोध, पुरातत्व और मृत्यु बोध की झलक है। ऐतिहासिकता के धरातल को नया रूप देकर 'वॉरेन हेस्टिग्स का साँड', 'पॉल गोमरे का स्कूटर' आदि महत्वपूर्ण कहानियों की रचना की गई।

उदय प्रकाश हिन्दी साहित्यकारों एवं समीक्षकों द्वारा उपेक्षित हैं। वे अफ़वाहों से घिरे हुए लेखक हैं। चर्चित व्यक्तियों, लेखकों, दोस्तों को अपनी कहानियों का पात्र बनाने का आरोप भी उनपर पडा है। 'मोहनदास' कहानी में उन्होंने गाँधीजी, मुक्तिबोध, शमशेर और परसाई जैसे व्यक्तियों को पात्र बनाकर कहानी लिखी। जैसे 'राम सजीवन की प्रेम कथा' में गोरख पांडेय, 'सयरन' और असत्य का भौतिक प्रमाण में अशोक वाजपेयी, 'आचार्य की कराह' और 'आचार्य की रजाई' में मैनेजर पाण्डे, 'पीली छतरीवाली लडकी' में विद्यानिवास मिश्र और 'दिल्ली की दीवार' और 'साइकिल' में विभूति नारायण आदि। लेकिन इसी तरह के आरोपों के पीछे अन्य साहित्यकार ज़रूर होगा। हमें यह भी देखना चाहिए कि इस प्रकार के अपवादों से बचकर उनकी रचनाएं संघर्ष करके आगे बढ़ती हैं। उदय जी कहते हैं - "जिस भाषा का प्रयोग और जिस तरह के झूठा का सहारा बार-बार

इस (पीली छतरीवाली लड़की) कहानी के बारे में लिया गया, वह समकालीन हिन्दी आलोचना की दिशा और दशा का गंभीर सूचक है। पागल कुत्ता, हिन्दी साहित्य का उन्मत साँड, नमलची, व्यक्ति केन्द्रित कहानी लिखनेवाला, बलात्कारी, योनि-खोजी आदि। लेकिन आप वस्तुपरकता के साथ देखें तो ये आरोप और यह भाषा मुश्किल से आधा - एक दर्जन उन तथाकथित लेखकों (जिनमें से एकाध अब बडे साहित्यिक पुरस्कार भी जुगाड चुके हैं) के गुड़ द्वारा लगाये गए हैं। ये वे लोग हैं, जिनकी सामाजिक अवस्थिति चाहे जो हो, संपर्क आदि कितने भी ऊँचे हो, इन्होंने अपने जीवनकाल में एक भी ऐसी रचना नहीं लिखी है, जो हिन्दी साहित्य के पाठकों की स्मृति में दर्ज हो साहित्य में पुरस्कार और प्रतिष्ठा की पतित सृष्टि के तलाश्ते ये लोग इतने ताकतवार है कि संभव है वे अब मेरा कुछ भी लिखना प्रतिबंधित करवा दे। बल्कि दिल्ली के कुछ दलाल, लेखकों ने जिन्होंने सार्वजनिक संस्थानों से अपनी मीडियाक्रिटी के बावजूद भरपूर लाभ उडाया है, ऐसी अपिल भी की है। दूसरी ओर 'पीली छतरीवाली लड़की' के पात्र राहुल के संघर्ष और उसके असफल भावुक प्रेम के साथ पीढ़ी के असंभव्य युवाओं ने अपनी यंत्रणाओं का साझा किया है। इस कहानी की अभूतपूर्व लोकप्रियता और तथाकथित व्यावसायिक सफलता के पीछे इसी पीडा और मंत्रणा की भूमिका है।"[1]

इन तमाम अफ़वाहों के बीच में भी वे अपने पाठकों पर भरोसा रखनेवाले हैं। पाठक वर्ग ने उनकी रचनाओं को दोनों हाथों से स्वीकार किया है। वास्तव में

---

1. उदय प्रकाश - अपनी उनकी बात - पृ. 88

उनकी ताकत भी ये पाठक वर्ग ही हैं। उनका कहना है - "...ऐसे अनर्गल आरोपों से मैं विचलित नहीं होता। मुझे अपने पाठकों, गंभीर साहित्य अभिरुचि से संपन्न लोगों पर पूरा विश्वास रखता है। इसका प्रमाण है भारी संख्या में आनेवाले पत्र। नेहरु की तरह मैं भी कह सकता हूँ कि मैंने अपने समय के लोगों को बेईतहा प्यार किया और उन्होंने भी मुझे बेपनाइ मोहब्बत दी।"[1] उदय प्रकाश एक ईमानदारी लेखक हैं इसमें कोई संदेह तो नहीं। क्योंकि उन पर प्रभावित रचनाकारों के बारे में कहने के लिए हिचकता नहीं। वे संजय चतुर्वेदी, विष्णु खरे, ब्रख्त आदि पर प्रभावित हैं।

उनके लिए एक 'ब्लाग' भी था। अब भी वे इन्टरनेट में रचनाएँ करते हैं। इन सभी विश्लेषण के अलावा समकालीन रचनाकारों से उनको अलग याने पृथक करेवाली बात यह हैं कि समय और समाज को केवल रचना के लिए उपयुक्त साधन नहीं मानते बल्कि समाज को एक उग्ररूपी पात्र के ज़रिए प्रस्तुत करते हैं चाहे वह मोहनदास हो, चाहे वह डॉ. वाकणकर हो या पॉल गोमरा हो। नरेश सक्सेना का विचार सराहनीय है - "उदय प्रकाश के पास संवेदना और सूक्ष्मता एक कवि की है और दृष्टि तक वैज्ञानिक की। उन्हें मैं बहुत ध्यान से पडता हूँ। वह मेरे प्रिय रचनाकारों में से है।"[2] उनकी पैनी दृष्टि अत्यन्त अनूठा ही है।

---

1. उदय प्रकाश - ईश्वर की आँख - पृ. 88
2. शीतलवाणी - आगस्त-अक्तूबर - पृ. 19

1.14.1 उदय प्रकाश का व्यक्तित्व

1.14.1.1 जन्म

उदय प्रकाश का जन्म 1952 में मध्यप्रदेश के सीतापूर गाँव में हुआ। सीतापुर गाँव में आदिवासियों की संख्या अधिक है। इस संबन्ध में उदय प्रकाश ने सुभाष चन्द्र के साथ बातचीत में बताया गया है - "मैं मध्यप्रदेश के शहडोल जिले के सीतापूर क्षेत्र का हूँ। यहाँ की 82 प्रतिशत आबादी गोंड, कोल और अन्य आदिवासियों की है। यह इलाका छोटा नागपूर इलाके तक है। मेरी पढ़ाई-लिखाई उसी परिवेश में हुई थी। वहीं का जीवन मेरा परिवेश था। ....मैंने शुरुआत पेंटिंग और कविताओं से की।"[1] सभी रचनाकारों के व्यक्तित्व निर्माण में अपना परिवेश का स्थान अत्यंत बडा है।

1.14.1.2 माता-पिता

उदय प्रकाश के पिता प्रेम कुमार सिंह है। माता गंगा देवी। इन दोनों की मृत्यु कैनसर से हुई थी। उदय जी कहते हैं - "बचपन से ही मृत्यु को मैंने लगातार अपनी आँखों से देखा है। बारह या तेरह वर्ष का था, जब माँ की मृत्यु हुई। उस वक्त उनकी उम्र सैंतीस वर्ष की थी। उन्हें श्वासनाली का कैनसर था। सत्रह वर्ष का था जब पिता की मृत्यु हुई। उन्हें दाढ और गाल का कैनसर था।"[2] उदय की प्रसिद्ध

---

1. उदय प्रकाश - अपनी उनकी बात - पृ. 143
2. उदय प्रकाश - दरियाई घोडा - फ्लैप से

कहानी 'दरियाई घोडा' पिता की मृत्यु पर केन्द्रित थी। उनकी रचनाओं का नाभिकेन्द्र तो मृत्यु बोध ही है।

1.14.1.3 परिवार

उनका परिवार तो संपन्न था। उनका एक भाई और एक बहन हैं। पत्नी का नाम कुमकुम। कुमकुम के व्यक्तित्व में भी सहधर्मिता और सामंजस्य की भावना है। डॉ. सुधा उपाध्याय का कथन देखिए - "मुझे व्यक्तिगत तौर पर इस दम्पति की सबसे बडी विशेषता दिखी, वह थी सहधर्मिती और सामजस्य की भावना, जिसके कारण ही उदय प्रकाश जैसे साहित्यकार और व्यक्ति का सृजन हुआ।"[1] इस कथन से स्पष्ट होता है कि हर एक पुरुष की उन्नति के पीछे एक स्त्री होती है। कुमकुम जैसी पत्नी नहीं होती तो उदय प्रकाश जैसे रचनाकार भी न होते। उसके दो बेटे हैं शांतनु व सिद्धार्थ। उनका परिवार एवं परिवेश उनकी रचनाओं की ताकत है।

1.14.1.4 व्यक्तित्व

उनकी संपूर्ण रचनाओं में भी उनका व्यक्तित्व बिखरा पड़ा है। उनका व्यक्तित्व भी पारिवारिक, सामाजिक धार्मिक और राजनीतिक परिवेश से ही पनपता है। उनके व्यक्तित्व के बारे में पत्नी की राय देखिए - "फिल्म, साहित्य और पब्लिक रिलेशन में मेरी रुचि उदय प्रकाश के साहचर्य के कारण ही आई... चीजों और लोगों को देखने का नज़रिया मैंने उदय जी से ही सीखा... रिश्तों को निभाने

---

1. शीतलवाणी - आगस्त-अक्तूबर - पृ. 143

का सलीका मैंने उदय जी से ही सीखा। तमाम आर्थिक दिक्कतों से गुजरते हुए भी कभी कोई असंतोष नहीं रहा और इस संतुष्टि के पीछे हमारी आपसी समझ और साहचर्य की भावना ही प्रमुख रही। उदय प्रकाश के व्यक्तित्व में ये जो एटजस्टिग्स नेचर पाती हूँ उसके बीज शायद उनके बचपन में ही पडे होगे।"[1] उनके पारिवारिक जीवन में अपवादों से कष्ट पहुँचाया लेकिन उनके एटजस्टिग्स नेचर वहाँ प्रकट हुआ। हिन्दी समाज ने अपवादों और झूठों के ज़रिए उन्हें बहुत कष्ट दिया। लेकिन वे उसमें चिंतित नहीं। वे समाज के लिए ईमानदारी से लिख रहे हैं। उनके संपूर्ण व्यक्तित्व के बारे में जानने के लिए संपूर्ण रचनाओं का विश्लेषण करना ज़रूरी है। क्योंकि परिवेश और व्यक्तित्व की उपज हैं उनकी संपूर्ण रचनाएँ।

1.14.1.15 शिक्षा

माँ के देहान्त के बाद बारह वर्ष के उदय प्रकाश अकेले और असुरक्षित होकर मध्यप्रदेश आ गये थे। वहाँ उन्होंने मोहन श्रीवास्तव नामक अध्यापक की सहायता एवं संरक्षण में पढाई शुरू की। उदय जी ने पिता की मृत्यु के बाद सागर यूनिवर्सिटी में दाखिला प्राप्त किया। वहाँ वे ट्यूशन करके पढते रहे। वहाँ भी डॉ. शिवकुमार मिश्र जैसे अध्यापक प्राप्त हुए जिन्होंने उन्हें सहायता की - हौसला बढाया। सागर यूनिवर्सिटी में विद्यार्थी जीवन में वे 'साम्यवादी विद्यार्थी संगठन' से जुड गये। उस समय उनकी उम्र सोलह साल की थी। उन्होंने सागर विश्वविद्यालय से बी.एस.सी, एम.ए हिन्दी प्राप्त की। पी.एच.डी का पंजीकरण जवहरलाल नेहरु

---

1. शीतल वाणी - आगस्त-अक्तूबर 2012 - पृ. 143

विश्वविद्यालय से किया था, विषय - "स्वतंत्रोत्तर कृषि सम्बन्धों में परिवर्तन और हिन्दी उपन्यास।" निर्देशक थे डॉ. पी.सी. जोशी और डॉ. नामवर सिंह। लेकिन ये कार्य अधूरा हो गया क्योंकि जे.एन.यू दिल्ली में सहायक प्राध्यापक रूप में नियुक्ति मिली।

1.14.1.6 कार्य क्षेत्र

जे.एन.यू और इसके मणिपूर केन्द्र में चार वर्षों तक अध्यापक रहे थे। उन्होंने संस्कृति विभाग, मध्य प्रदेश भोपाल में लगभग दो वर्ष विशेष कर्तव्य अधिकारी के रूप में काम किया। उन्होंने 'पूर्वाग्रह' के संपादकीय विभाग में भी काम किया था। वे एक वर्ष तक टाइम्स फाउन्डेशन के स्कूल आफ सोश्यल में जर्नलिज़म में अध्यापक थे। लगभग दो वर्षों तक उन्होंने पी.टी.ए और एक वर्ष में इंडिमेट टेलिविषन के विचार और पटकथाकार के रूप में काम किया। कुछ समय तक 'संडे मैल' में संपादक रहे। 'ब्लाग' में भी लेखन करते रहते हैं। वे आज भी स्वतंत्र लेखक, मीडिया लेखन विचारक के रूप में काम कर रहे हैं।

1.14.2 उदय प्रकाश का रचना संसार

उदय प्रकाश बहुमुखी प्रतिभा हैं। उन्होंने जो कहानियाँ लिखीं उसके ज़रिए हिन्दी जगत में सबसे ज़्यादा वे चर्चित हुए। कवि, आलोचक, निबंधकार, अनुवादक, फिल्मकार आदि कई दृष्टियों से उनकी कलाकार-सृजनात्मकता की अभिव्यक्ति हुई।

1.14.2.1 कहानीकार उदय प्रकाश

समकालीन हिन्दी कहानीकारों में एक अलग व्यक्तित्व रखनेवाले रचनाकार हैं उदय प्रकाश। उनका उपनाम तो 'सिंह' है फिर भी साहित्य की मिट्टी में उदय प्रकाश नाम से जाना जाता है। उदय प्रकाश को श्रेष्ठ कहानीकार व्यक्तित्व पर प्रकाश डालते हुए श्री बलराज पांडेय में लिखते हैं - "एक कहानीकार के रूप में सन् 1980 के बाद उदय प्रकाश का नाम चर्चा में ज़्यादा आया। उन्होंने किसी साहित्यिक आन्दोलन का प्रणेता बनने में कभी कोई दिलचस्पी नहीं दिखायी कथाकारों का कोई गुट भी उन्होंने नहीं बनाया। हिन्दी के समकालीन लेखन की पैतरेबाजी से उन्होंने हमेशा अपने को अलग रखा। एक रचनाकार के स्वाभिमान से उदय प्रकाश ने कोई समझौता नहीं किया और न ही चर्चित पुरस्कृत होने के लिए कहीं कोई भाग दौड की। वे लिखते रहे और पढते रहे। केवल पुस्तकें नहीं, जनता का जीवन उस जनता का जीवन जो आज़ादी के साठ वर्षों के बाद भी सत्ता हथियारे लोगों के दमन का शिकार है।"[1] कहानीकार के रूप में देखा जाये तो वे समय की संकटपूर्ण स्थितियों पर दृष्टि डालनेवाले कहानीकार हैं। उन्होंने परंपरागत रूप में प्रचलित पुराने मुहावरों को तोड़कर समकालीन कहानी को नया मोड दिया।

अब तक उनके नौ कहानी संग्रह प्रकाशित हो चुके हैं। इसके अलावा दस प्रतिनिधि कहानियाँ नामक एक पुस्तक का प्रकाशन भी हुआ। पहला संग्रह दरियाई घोडा, वाणी प्रकाशन द्वारा प्रकाशित यह संग्रह असहर वजाहत असद जैसी, विनय

---

1. वसुधा-1997 जनवरी-मार्च - अंक 38 - पृ. 324

दुबे, संजीव क्षितिज, मनमोहन, नरेन्द्र मोहन, ताराजेन्द्र धोडपकर, अमितेश्वर, धीरेन्द्र, बलराम, बर्याम सतिह, बालेन्दू परसाई, प्रभा जोशी, राफक तनवीर, ललित शाह, अंजनी चौहान, महेन्द्रपाल सिंह, नगेन्द्र सिंह संजय चौहान आदि प्रिय साथियों के लिए समर्पित है। यह कहानी संग्रह उनके श्रेय का हेतु बन गया। उस संग्रह की कहानियों में आम जीवन के सुख-दुख के चित्र है। 'दरियाई घोडा' संग्रह की कहानियाँ कथ्य की सहजता, भाषा की ताजगी और कथा शिल्प के नएपन के लिए चर्चित और प्रशंसित रही है। इस संग्रह की 'पुतला' 'दद्दुतिवारी : गणनाधिकारी' तथा 'टेपचू' चर्चित कहानियाँ हैं। इन कहानियों में आज के सामाजिक यथार्थ की विडम्बनाएँ अलग स्तरों पर व्यक्त हुई हैं। 'दद्दु तिवारी : गणनाधिकारी' कहानी का पात्र दद्दु तिवारी आज की आटी हुई छद्म मानसिकता की अच्छी मिसाल है। जबकि 'मूंगा धागा और आम का बौर' कहानी में ग्रामीण परिवेश के सामाजिक संबन्धों के काव्यात्मक स्मृति चिह्न है। जीवन के यथार्थ के प्रति संतुलित दृष्टि, साधा शिल्प संयोजन और कथा चित्र में काव्यात्मक संवेदन इन कहानियों की शक्ति हैं।

उदय जी का दूसरा कहानी संग्रह है - 'तिरिछ'। वाणी प्रकाशन द्वारा प्रकाशित यह संग्रह मनजीत बाबा और स्वर्गीय पूनम वर्मा की स्मृति में समर्पित है। उदय जी की श्रेष्ठ कहानियाँ - तिरिछ, छप्पन तोले का करधन, हीरालाल का भूत आदि इस संकलन में है। इन कहानियों के संदर्भ में विष्णु नागर के विचार देखिए "जैसी कहानियाँ लिखने के लिए कला ही नहीं, कलेजा भी चाहिए। इनमें हमारे

---

1. दरियाई घोडा - फ्लैप से

समाज की भर्त्सना भी है और उसकी करुणा गाथा भी। ये कहानियाँ सघी और तनी हुई कविता भी है और ऐसी कहानियाँ विराट फंतासी भी है, और निर्मम, वस्तुपरक बयान भी। इन कहानियों ने संग्रह के रूप में आने से ही समकालीन हिन्दी कहानी के परिदृश्य में सार्थक हस्ताक्षेप किया है और अब यह अधिक गहरी और जिम्मेदार चर्चा की मांग करती है।"[1] यह संग्रह श्रीकांत वर्मा स्मृति पुरस्कार से सम्मानित हुआ।

उदय जी का तीसरा कहानी संग्रह है - "और अंत में प्रार्थना। वाणी प्रकाशन द्वारा प्रकाशित यह संग्रह जसविद और सफदर की स्मृति को समर्पित है। उनकी कहानी "...और अंत में प्रार्थना या थर्ड डिग्री ज़्यादा यथार्थ इसलिए लगती है उनमें यथार्थ का सिर्फ उपयोग नहीं, उसकी रचना करते या बुनते नहीं दिखाई देते। यही फर्क... और अंत में प्रार्थना को असाधारण कहानी बनता है। इसमें आत्म कथाएँ हैं - ये आत्मकथाएँ विगत का पुण्य-स्मरण नहीं है और न ही नास्टेल्जिया, बल्कि ये आत्मकथाएँ इसलिए यथार्थ हैं कि वे वर्तमान के दुर्वाज़े पर खडी होती हैं। उनकी चर्चित कहानी 'और अंत में प्रार्थना' के नायक डॉ. वाकण्कर काल्पनिक पात्र नहीं। डॉ. वाकण्डकर 'मेडिकल एथिक्स पर विश्वास करते-करते अंत तक सच्चाई पर खडे होते हैं। यह यथार्थ की विज़न देनेवाली कहानी है।

उदय प्रकाश का चौथा कहानी संग्रह है - "पॉल गोमरे का स्कूटर' वाणी प्रकाशन द्वारा प्रकाशित है। यह संग्रह प्रसन्ना राजकुमार केसवानी (इंडिया टुडे) को

---

1. तिरिछ - फ्लैप से

जिनके कारण 'पॉल गोमरे का स्कूटर', वॉरेन हेस्टिंग्स का सॉड लिख पाना संभव हुआ उनको समर्पित है। इस संग्रह की चर्चित कहानी 'पॉल गोमरे का स्कूटर' उपनिवेशवाद के ज़माने में आम आदमी की ज़िंदगी में दिखाई पडनेवाला परिवर्तन है। अपने नाम को भी 'रामगोपाल' से पॉल गोमरे के रूप में बदलनेवाले आधुनिक मानव के चित्रण के ज़रिए कहानी में आधुनिक भावबोध को केन्द्र में लाकर खडा कर दिया गया। 'वॉरेन हेस्टिंग्स का साँड' की रचना अपने समय की व्याख्या उपनिवेशिक इतिहास के तहत वे करते हैं। इसमें अतीत है और वर्तमान भी। इन दोनों का मुडभेड हम देख सकते हैं। इसमें जादुई यथार्थवाद एवं फंतासी शैली का प्रयोग है। यह समकालीन कहानी के क्षेत्र में नया आयाम है। ये नयी चुनौतियाँ भी हैं। पंकज सिंह का कहना है किये चुनौतियाँ यथार्थ को पहचानने और उस पहचान को रचना के दौरान बस्तने से ताल्लुख रखती हैं। इस धरातल पर उदय का अप्रतिम निजीवन उन चरित्रों एवं प्रसंगों के साथ आता है जो स्वप्न, लोक जीवन के रंग यथार्थ, इतिहास, मिथकों और संस्कृतियों में आवाजाही करते हुए हमारी स्मृति और संवेदना में अपनी रलमल उपस्थिति महसूस कराने लगे हैं। समय उनकी कहानियों का केन्द्र है।

उदय प्रकाश का पाँचवाँ कहानी संग्रह है - 'दस्तात्रेय का दुःख'। वाणी प्रकाशन द्वारा प्रकाशित यह संग्रह डॉ. हरिमोहन शर्मा, निरंजन और संघर्षशील युवा पत्रकार अनिल चमडिया को समर्पित है। इस संग्रह की चर्चित कहानी है 'दिल्ली की दीवार'। इन कहानियों के माध्यम से उपनिवेशवादी ताकतें हमारी जैसी तीसरी दुनिया का विकास के नाम पर जो शोषण करती आ रही है उसका खुलासा

हुआ है। इस संग्रह की कहानियों के बारे में अजद जैदी का वक्तव्य देखिए - "...उदय सब आल्टर्न (गरीब और अक्सर दलित जन) को नायक की तरह पेश करने की समस्या से जुडने और मध्यवर्गीय संस्कृति से उसके बुनियादी विरोध को रचनात्मक ताकत के साथ प्रस्तुत करनेवाली अपनी पीढ़ी के अग्रणी कथाकार है।"[1]

उदय प्रकाश की छठी लंबी कहानी है 'पीली छतरीवाली लडकी'। यह वाणी प्रकाशन द्वारा प्रकाशित है। यह कहानी निर्मल वर्मा की एकांत, नैतिक और अपूर्व सृजनात्मक उपस्थिति को और अपने मित्र तथा प्रकाशक अरुण महेश्वरी को जिनके कारण इस कथा को पूरा करने का साधन और अवकाश मिला, उनको भी समर्पित है। कुछ लोग इसे उपन्यास मानते हैं। लेकिन उदय जी बनाते हैं - "यह लम्बी कहानी है, उपन्यास नहीं। इतने सारे पृष्टों के बावजूद इसमें जो चीज़ अनुपस्थित है वह है औपन्यासिक या एपिकैलिटी।"[2] यह कहानी तो इस समय अभी जीने जा रहे युवक की जिन्दगी है। इस कहानी में भूमंडलीकरण के तहत पनपती अपसंस्कृति, विश्वविद्यालय में दिखाई पडनेवाला भ्रष्टाचार, दलितों की स्थिति आदि कई समसामयिक मुद्धे दर्ज हैं।

उदय प्रकाश का अगला कहानी संग्रह है 'मैंगोसिल'। इस कहानी संग्रह में मैंगोसिल काफी चर्चित कहानी है। यह तो एक लंबी कहानी है। अविकसित राष्ट्रों में दिखाई पड़नेवाली गरीबी का चित्रण है इसमें। एक रोग के नाम के रूप में

---

1. उदय प्रकाश - दत्तात्रेय का दुःख - फ्लैप से
2. उदय प्रकाश - पीली छतरीवाली लड़की - प्लैप से

'मैंगोसिल' हमारे सामने उदय जी रखते हैं। भारतीय मनुष्य की संवेदना का चित्रण है इसमें।

'मोहनदास' उदय प्रकाश की श्रेष्ठ कहानी है। यह वाणी प्रकाशन द्वारा प्रकाशित हुआ है। यह कहानी संग्रह कॉमरेड विजेन्द्र सोनी को, इस उम्मीद के साथ कि वे मोहनदास के साथ अन्त तक खडे रहेंगे इनको समर्पित है। उनकी यह महाकाव्यात्मक कहानी 2005 आगस्त में 'हंस' पत्रिका में प्रकाशित हुई थी। प्रकाशित होने के साथ ही अनेक भाषाओं में इसका अनुवाद हुआ। साथ ही साथ इसका मंचन करना शुरू कर दिया गया। 'मोहनदास' पर फीचर फिल्म बनी है। आस्ट्रिया का पुरस्कार से सम्मानित हुआ। यह कहानी गाँधीवादी विचारधारा को आत्मसात करते हुए सत्य को उजागर करती है।

उदय प्रकाश का और एक कहानी संग्रह है 'अरेबा-परेबा' यह तो वाणी प्रकाशन से प्रकाशित हुआ है। इसमें संकलित कहानियाँ इसके पूर्व संग्रहों में प्रकाशित हो चुकी हैं।

उदय प्रकाश की कहानियों से गुज़रने में हमें पता चलता है कि ये कहानियाँ अपने समय एवं समाज की सार्थक अभिव्यक्ति हैं। उनकी कहानियाँ किसी भी राजनीति दल के पीछे चलनेवाली नहीं हैं, अंधेरे में मशाल की तरह चलनेवाली हैं। उनकी कहानियों में व्यवस्था विरोध, पुलीस एवं अन्य गुंडों की क्रूरताएँ, राजनीति का अलग चेहरा, स्त्री, दलित, भूमंडलीकरण, परिवार को जोडने की प्रवृत्तियाँ आदि हम देख सकते हैं।

1.14.2.2 कवि उदय प्रकाश

हिन्दी साहित्य जगत के मशहूर कहानीकार के साथ उदय प्रकाश कवि भी हैं। उदय जी ओम निश्चल के साथ होनेवाले संवाद में कहते हैं - "ओम जी, मैं मूलतः कवि ही हूँ। इसको मैं भी जानता हूँ और बाकी सभी लोग जानते हैं मैं तो अक्सर मज़ाक में कहा करता हूँ कि मैं एक ऐसा कुम्हार हूँ, जिसने धोखे से कभी एक कमीज सिल दी और अब उसे सब दर्जी कर रहे हैं। सच तो यह है कि मैं दरअसल कुम्हार ही हूँ। मेरी कविता के पाठक, अनुवादक और प्रशंसक कम नहीं है।"[1] उनकी कविताओं में स्त्री है, दलित है, राजनीति है और उपनिवेशवाद का चित्रण है। इसलिए वे मूलतः कवि हैं। आठवें दशक के कवियों में उदय प्रकाश ऐसे एक कवि हैं जिनके पास प्रतिरोध की भाषा है। किसानों को, मज़दूरों को और उनकी संवेदनाओं को आम आदमी से जोडा जाता है।

उदय जी के चार कविता संग्रह अब तक प्रकाशित हुए हैं। वे इस प्रकार हैं - 'सुनो कारीगर' (1980), 'अबूतर-कबूतर' (1984), 'रात में हारमोनियम' (1998) और 'एक भाषा हुआ करती है' (2009) आदि। इसके अलावा 'कवि ने कहा' और 'नई सदी के लिए पचास कविताएँ' प्रकाशित हो चुके हैं। लेकिन ये दोनों किताबों उनकी चुनी हुई कविताओं का संकलन हैं।

'सुनो कारीगर' उदयजी का पहला काव्य संग्रह है। यह वाणी प्रकाशन द्वारा प्रकाशित है। यह संग्रह काशीनाथ सिंह और राजेश, अरुण कमल, नरेन्द्र जैन,

---

1. उदय प्रकाश - अपनी उनकी बात - पृ. 130

राजेन्द्र शर्मा, नन्दकिशोर नवल, मंगलेश, भारत भारद्वाज, मोहन जी, असगर वजाहत, अनिल राजा, स्वप्निल, प्रभात मित्तल और श्याम के लिए समर्पित है। इस संग्रह में 'पिता' नामक कविता में मानवीय रिश्तों का चित्रण है। वे 'पिता' को जटिल चरित्र के रूप में दिखाते हैं। उदय जी को पिता जी से गहरा आत्मीय संबन्ध भी था। वे लिखते हैं-

"पिता पहाड की तरह
चलते भीड के बीच
उनके कंधे पर मैं
जंगली तोते की तरह बैठा रहता
बाद में पिता गायब हो गये
कहते हैं खेत कुदाल,
बैल, इमारतें, ईटें, दरवाजे, बाजार
उन्हें पचा गये।"[1]

मृत्यु के पूर्व पिता जी से जुडनेवाली स्मृति रेखा वर्षों बाद भी उसी रूप में स्थित है। 'सरकार' नामक कविता श्रेष्ठ है। यह शोषण के विरुद्ध लडनेवाली कविता है। आक्रोश भरी आवाज देखिए-

"ये तुम कौन-से सरकार हो जो
राक्षस की तरह आते हो
तबाही मचाते हो
सब समेट-बटोर कर ले जाते हो।"[2]

---

1. उदय प्रकाश - सुनो कारीगर - पिता - 16
2. उदय प्रकाश - सुनो कारीगर - सरकार - पृ. 39

उनकी 'तिब्बत' कविता 1981 में भारत भूषण अग्रवाल पुरस्कार से सम्मानित हुआ। उदय जी का नाम इस कविता के साथ चर्चा में ज्यादा आया। कविता की कुछ पंक्तियाँ यों हैं-

"तिब्बत में बरसात
जब होती है
तब हम किसी मौसम में
होते हैं।
तिब्बत में जब तीन बजते हैं
तब हम किस समय में
होते हैं?"[1]

उदय जी को तिब्बत की जनता के प्रति गहरी मानवीय संवेदना है। परमानन्द श्रीवास्तव ने इस कविता को उदय जी का प्रतिमान माना।

'अबूतर-कबूतर' उदय प्रकाश का दूसरा काव्य संग्रह है। यह काव्य संग्रह केदारनाथ सिंह को समर्पित है। इस काव्य संग्रह की कविताएँ तीन खण्डों में विभाजित हैं - 'पसली का दर्द', 'अबूतर-कबूतर', 'करीमन और अशर्फी' आदि। 'प्रेम' विषय पर लिखी गई कविता है 'कुछ बन जाते हैं'। कुछ पंक्तियाँ यों हैं-

"तुम मिसरी डाली बन जाओ
मैं दूध बन जाता हूँ
तुम मुझ में घुल जाओ

---

1. उदय प्रकाश - सुनो कारीगर, तिब्बत - पृ. 88

तुम ढाई साल की बच्ची बन जाओ
मैं मिसरी घुला दूध हूँ मीठा
मुढे एक सांस में पी जाओ।"[1]

चीज़ों को नए रूप में देखने की क्षमता इस कविता से हमें प्राप्त होती है।

इस संग्रह की अंतिम कविता है "वैरागी आया है गाँव।" यह नक्सलबाडी आंदोलनों से प्रभावित होकर 'सुनो कारीगर' और अबूतर-कबूतर के बाद उनके द्वारा लिखित काव्य संग्रह है। 'रात में हारमोनियम' इसमें 1984 से लेकर 1998 तक की कविताएँ हैं। इसमें इतिहास का स्पन्दन, उज्वल भविष्य के प्रति स्वप्न आदि है। इस संग्रह की कविता के बारे में केदारनाथ सिंह लिखते हैं - "मुझे हमेशा लगता रहा है कि उदय प्रकाश की कहानियों के जादुई संसार में प्रवेश करने की सबसे विश्वसनीय कुंजी उनकी कविताओं के पास है। इस संग्रह की अधिकांश कविताएँ, मेरी इस धारणा को न सिर्फ नयी खुराक देती है, बल्कि किसी गहरे धरातल पर उसे और अधिक पुष्ट भी करती है।"[2]

'दुर्दिनों में कविताएँ' में वे पौराणिक संदर्भों को आधुनिक परिवेश देते हैं।

नल फिरता है नगर-नगर
दमयंती चांडाल के बिस्तर पर
अपनी देह के चीथडे सीती है।"[3]

---

1. उदय प्रकाश - अबूतर-कबूतर - कुछ बन जाते हैं
2. उदय प्रकाश - रात में हारमोनियम - फ्लैप से
3. उदय प्रकाश - रात में हारमोनियम - दुर्दिनों में कविताएँ - पृ. 111

इस संग्रह की श्रेष्ठ कविता है 'बचाओ'। समकालीन संदर्भ में 'बचाना' शब्द ठीक ही है, क्योंकि आज अमरुद के पेड, लोहार, किताब, सच्चाई, नैतिकता, मानवता आदि को बचाना है। साथ ही साथ मूल ध्वनियों जो हमारे जातीय ध्वनियों से लुप्त हो रही है, उन्हीं को बचाने का आह्वान देते हैं-

"चिंता करो मूर्द्धन्य 'ष' की
किसी तरह बचा सको तो बचालो ङ्
देखो, कौन चुरा कर लिये चला जा रहा है खडी पाई
और नागरी के सारे अंक
जाने कहाँ चला गया ऋषियों का 'ऋ'

x x x

बचाना ही हो तो बचाये जाने चाहिए
गाँव में खेत, जंगल में पेड, शहर में हवा
पेडों में घोंसले, अखबारों में सच्चाई, राजनीति में
नैतिकता, प्रशासन में मनुष्यता, दाल में हल्दी"[1]

इस संग्रह की अंतिम कविता संतों की पदशैली में लिखी हुई एक विलक्षण कविता है, जो उदय जी के गहरे काव्य-संस्कार का प्रमाण है।

उदय जी का चौथा कविता संग्रह है 'एक भाषा हुआ करती है।' यह किताब घर से प्रकाशित है। यह भी तीन खण्डों में उन्होंने विभाजित किया है।

---

1. उदय प्रकाश - रात में हारमोनियम - बचाओ - पृ. 22

पहला खण्ड 'जो किसी कदर बचा खुचा जीवन है'। दूसरा खण्ड 'जलते हुए दृश्य में अपने पंख बचाते हुए' और तीसरा खण्ड 'एक भाषा हुआ करती है'। इसमें एक भाषा हुआ करती है बहुत चर्चित है। इसमें उदय जी ने साम्प्रदायिकता को मुख्य मुद्दे के रूप में चित्रित किया है। हमारे धार्मिक मूल्यों में बदलाव तो आ गया। हमारे यहाँ सांप्रदायिकता के नये-नये रूप हम अयोध्या हत्याकाण्ड और काश्मीर प्रश्न के रूप में देख रहे हैं। आज भी हर एक भारतीय इसके प्रति चिंतित है। धार्मिक नेताओं के हाथ में कोई प्रश्न आ जाये तो वह सांप्रदायिकता का रूप धारण करता है। कभी राजनीतिक नेताओं ने इसी को अपनाया है। राजनेताओं के षड्यंत्रकारि विचारों से उदय जी सतर्क हैं-

> "यह सबरमती एक्सप्रेस में जलते हुए डिब्बे के भीतर का
> दृश्य नहीं था
> यह अठारह ज्ञातिवार का गोधरा दौर गुजरात नहीं
> यह अठारह साल पहले की दिल्ली थी।"[1]

गुजरात में हुए हत्याकांड एवं अन्य अमानुषिक प्रवृत्तियों के बारे में उदय जी याद करते हैं। 'आग' कविता में हत्याओं का चित्रण है।

गुजरात के कौसर बानो के गर्भ को तलवार से चीरकर उसके साथ बलात्कार कर, उनके माधे पर तलवार से 'ओम' लिखा था। उनका खून भारत भर बह रहा है, उनकी आवाज़ और उनके अजन्म बच्चे की आवाज़ आदि आज भी गूँज रहे हैं। इस पर चिंतित होकर उनका प्रतिरोध तो उदय जी करते हैं-

---

1. उदय प्रकाश - एक भाषा हुआ करती है - आग - पृ. 66

"सबसे मुकुद्धम
सबसे पहले
सबसे पवित्र आवाज की हिफाजत में
एक सच्चा जेहाद... एक धर्म युद्ध
एक नया इंकलाब
कोसरबानी के
उस अजन्मे की आवाज
सारी कायतान
समू सृष्टि
सारे हर्फों... सारी लिपियों में
हिन्दी की सारी किताबों में
गूँजेगी वो आवाज
समूचे व्योम में सदा... सदा...
कौसर बानो क
उस अजन्में की आवाज
सदा... सदा।"[1]

इस काव्य संग्रह में उदय जी ने आदिवासी, दलित, विज्ञापन आदि कई समकालीन विषयों को उभारा है। उनकी कविताओं से युगीन परिवेश को समझा जा सकता है।

---

1. उदय प्रकाश - एक भाषा हुआ करती है - ध्रुपद - पृ. 84-85

उदय प्रकाश समकालीन कविता के क्रांतिधर्मी आचरण के वरिष्ट कवि हैं। प्रसिद्ध आलोचक और कवि अशोक वाजपेयी ने लिखा है कि हमारे समय में कविता शायद ऐसा समाज नहीं बना सकती जो उसका अपना हो, पर वह ऐसे समाज की आकांक्षा करती है और इस प्रसंग में उदय प्रकाश की कविता एक अधीर पुकार है।

1.14.2.3 अनुवादक उदय प्रकाश

उदय प्रकाश हमारे सामने 'अनुवादक' के रूप में अपनी भूमिका आदा कर रहे हैं। अच्छे अनुवादक का गुण है दोनों भाषाओं का ज्ञान (स्रोत एवं लक्ष्य भाषा)। उदय जी बहुपंडित एवं बहुविज्ञ है। फ्रेंच और अंग्रेज़ी भाषाओं के वे अच्छे जानकार हैं। उनकी अनूदित रचनाएँ निम्नलिखित हैं-

- लाल घास पर नीले घोड (मखाईल सात्रे के नाटक का अनुवाद)
- कला अनुभव (प्रोहरियन्ना की सौन्दर्य शास्त्रीय पुस्तक का अनुवाद)
- इंदिरा गाँधी की आखिरी लडाई (बी.बी.सी सवाददाता मकि-टली-सतीश जैकेब की किताब का अनुवाद)
- रोम्या रोला का भारत (आशिंक अनुवाद और रूपांतरण)

1.14.2.4 उदय प्रकाश की भारतीय एवं विदेशी भाषाओं में अनूदित कृतियाँ

उदय प्रकाश की रचनाओं का अनुवाद देशी एवं विदेशी भाषाओं में हुआ है। क्योंकि उनकी ख्याति भारत तक सीमित नहीं, विश्व भर उनकी ख्याति फैल रही है। पाकिस्तानी पत्रिका 'आज' के संपादक अजमल कमाल का निम्नलिखित वक्तव्य इसको और भी पुष्ट करता है - "पाकिस्तान में सबकुछ है जो हिन्दुस्तान में है लेकिन उदय प्रकाश जैसे अफनानिगार को छोडकर।"[1] उदय प्रकाश केवल भारत का मात्र नहीं सबका 'उदय' प्रकाश है।

1.14.2.5 उनकी अनूदित रचनाएँ

1. Rage Revelry and Romance : अनुवाद - Robert Hueckstedt (सृष्टि पब्लिकेशन, नई दिल्ली)
2. Der Golden Gurtel (जर्मन) - अनुवाद - Lothar Lutze.
3. Short Shorts Long Shorts - अनुवाद - Robert Hueckstedt and Amit Tripuraim.
4. Girl with Golden Parasol - अनुवाद - Jason G Grunebaum. (येल विश्वविद्यालय, अमेरिका से प्रकाशित)
5. Das Maectchen mit dom Glben Schirm जर्मन में अनुवाद - Ines Farnell, Heinz Werner Wessler व Reinhald & Chim.

---

1. शीतलवाणी - अगस्त-अक्तूबर 2012 भूमिका

6. Und am Ende in Gobet : जर्मन में अनुवाद तिरिछ अति इतर कथा (मराठी) : अनुवाद जयप्रकाश सावंत, शब्दालय प्रकाशन, महाराष्ट्र)

7. अरेबा परेखा (मराठी) - अनुवाद : जयप्रकाश सावंत (पेंगुइन इंडिया)

8. मोहनदास (कन्नड) अनुवाद : आर.पी. हेगडे लोहिया प्रकाशन, कर्नाटक

9. मोहनदास (उडिया) अनुवाद : मनुदास (कोणार्क पब्लिशर्स भुवनेश्वर, (उडिया)

10. मोहनदास (मराठी) - अनुवाद - वनीता सावंत लोकवाङ्मय गृह मुम्बई

11. मोहनदास (उर्दु) - अनुवाद - हैदर जाफरी सय्यद

12. मोहनदास (नेपाली) - अनुवादक योगेश

13. मोहनदास, (मलयालम) - एन.एम. सणी

14. पीली छतरीवाली लडकी (मलयालम) - एन.एम. सण्णी

15. मोहनदास (पंजाबी) - रविन्दर सिह बट

16. मोहनदास (अंग्रेजी) - प्रतीक काँजीलाल

17. Walls of Dehi - अनुवाद - Jason Gruneebani UWA Publishing, Weston Astrabu से प्रकाशित (2012)

18. दिल्ली की दीवार (मलयालम) - एन.एम. सण्णी

1.15 अन्य पहचान : साहित्यिक अध्ययन एवं यात्राएँ

उदय प्रकाश ने 2003 में होलेण्ड में संपन्न अंतर्राष्ट्रीय काव्य सम्मेलन में भाग लिया। यह उनकी पहली विदेश यात्रा थी। उसके बाद वे 2004 में जर्मनी गए

थे यह तो प्रसिद्ध भारतविद् प्रो. लेतार लुइटस से मिलने के लिए था। जर्मनी जाने के पीछे और एक उद्देश्य था कि बचपन से प्रभावित ब्रर्तुल ब्रख्त के घर देखना। इस उद्देश्य को उन्होंने 25 दिन वहाँ रहकर पूरा किया। 2006 में विश्व पुस्तक मेले, फ्रेंकफूर्ट में 2006 में विश्व पुस्तक सम्मेलन में उन्होंने भाग लिया। यह तो अकादमिक उद्देश्य की यात्रा थी। उसमें उदय जी भारत से अकेला निमंत्रित व्यक्ति था। 2007 में न्यूयोर्क में आयोजित विश्व हिन्दी सम्मेलन में उन्होंने भाग लिया। 2008 में अंतर्राष्ट्रीय साहित्य महोत्सव में भाग लेने के लिए ट्यूरिनो, इटली की यात्रा, उसी साल में साउथ कोरिया में आयोजित 'वैश्वीकरण के दौर में साहित्य' विषय पर अन्तर्राष्ट्रीय साहित्य सम्मेलन में उन्होंने भाग लिया एवं प्रपत्र भी प्रस्तुत किया। आगरा में आयोजित सार्क देशों के साहित्य महोत्सव में 2009 में उन्होंने आधार व्याख्यान दिया। 2012 मई में उन्होंने कार्लटन कालेज मीनेसोता अमेरिका में Lindesmith Lecture दिया। कुलमिलाकर कहें तो उनकी सारी यात्राएँ साहित्यिक रही थीं।

1.16 निबन्ध एवं साक्षात्कारों का संकलन

निबन्धकार के रूप में भी उनका नाम अद्वितीय है। उनका निबन्ध जो है आलोचना की खजाना है। यह तो उदय प्रकाश द्वारा पिछले दो दशकों में लिखे गये। आलेखों का चुना हुआ संकलन है। समय समय पर ये सभी आलेख विभिन्न पत्र-पत्रिकाओं में प्रकाशित होकर चर्चित हो चुके हैं। इनमें संस्मरणात्मक लेखन, साक्षात्कार, कला, संगीत, सिनेमा आदि कलारूपों पर तात्कालिक टिप्पणियाँ, आलोचना समीक्षा तथा सामाजिक प्रसंगों पर सामयिक लेखन सम्मिलित हैं। यह

निबन्ध संग्रह मुख्यतः पाँच खण्डों में विभाजित है। प्रथम 'समयबद्ध', दूसरा 'बातचीत', तीसरा 'व्यक्तिपरक', चौधा 'आंकलन' और पाँचवाँ 'सनद' हैं।

प्रथम खण्ड में इस जमाने में एक दूसरे को प्रतियोगी, प्रतिद्वन्द्वी और उसे अलग रखनेवालों पर उनका विचार सराहनीय है। उनके मन में अपने समय की चिंता है क्योंकि उनके जैसे अनेक रचनाकार भी प्रतियोगी के रूप में खडे हैं। 'बात चीत' खण्ड में मशहूर रंग-निर्देशक सुरेश अवस्थी, हबीब तनवीर, अहमद अली (पाकिस्तान), बाबू कोडी, व्यंकटरामन कारत, बसी कौल और नामवर सिंह, सुधीश पचौरी जैसे रचनाकारों के प्रभावशाली इंटरव्यू एवं निराला, मुक्तिबोध, निर्मल वर्मा, अमरकांत जैसे रचनाकारों की आलोचना कर्म का जिक्र किया गया है।

'व्यक्तिपरक' खण्ड में बाबा नागार्जुन बीसवीं सदी के अंतिम संत कवि, एक बात अभी लिखी नहीं गयी, देवीशंकर अवस्थी आदि महत्वपूर्ण निबंध है। रघुवीर सहाय के बारे में उदय जी अपना विचार प्रकट करते हैं। रघुवीर सहाय पत्रकारिता के क्षेत्र से बाहर आये क्योंकि पत्रकारिता के संदर्भ में पत्रकार एवं संपादक दलाल वर्ग है। पत्रकार कभी-कभी संवाददाता एवं रिपोर्टर बनकर चारों ओर टहल रहे हैं। उदय जी एक पत्रकार हैं। उस क्षेत्र का हर कार्य उदय जी समझते हैं।

'आंकलन' खण्ड में हिन्दी कविता की प्रवृत्तियों पर विचार है। इस खण्ड में केदारनाथ सिंह, कुमार विकल, सौमित्र मोहन, हरिनारायण व्यास, विष्णु नागर आदि की कविताओं पर लिखे गये आलेखों के माध्य से इन कवियों से एक रागात्मक तादात्म्य वे स्थापित करते हैं। इस खण्ड में कुमार विकल, असद जैदी

आदि रचनाकारों पर भी लिखे गये लेखन विशेष उल्लेखनीय हैं। 'सनद' खण्ड महत्वपूर्ण है। दूरदर्शन के प्रति उनका विचार लोक संस्कृति, उपभोग संस्कृति, उत्कृष्ट साहित्य क्या है? आदि पर विचार है इस खण्ड में।

उदय प्रकाश का दूसरा निबन्ध एवं साक्षात्कारों का संकलन है 'अपनी उनकी बात'। यह 2008 में वाणी प्रकाशन द्वारा प्रकाशित हो चुका है। इसमें उदय प्रकाश से लिये गये साक्षात्कारों के अंश हैं। दो खण्डों में विभाजित इस संग्रह का पहला खण्ड अपनी बात से है। इसमें उदय जी से गौतम सन्याल की बात चीत, अजितराय की बात चीत, संजय अरोरा की बातचीत, रमेश उपाध्याय की बातचीत, दयाशंकर की बातचीत, त्रिनेत्र जोशी की बातचीत, ओम निश्चल की बातचीत और शंकर चौधरी की बातचीत आदि प्रशंसनीय हैं।

खण्ड दो में उनकी बात है। जिसमें पाकिस्तानी शायरा सुलताना मेहर से उदय जी की बातचीत, कोमल कोठरी से उदय की बातचीत और लोथार लुप्सा से उदय प्रकाश की बातचीत प्रमुख है।

'नयी सदी का पंचतंत्र' तीसरा निबन्ध है। इसमें आलेखों-टिप्पणियों, निबन्ध-समीक्षाओं का संकलन है। ये निबन्ध भी चार खण्डों में विभाजित हैं। कुलमिलाकर इसमें 106 लेख हैं। इसमें उदय जी का लेखकीय सरोकार तीखे गंभीर दर्शन से है। 'समीक्षा' खण्ड में कविता की ओर में 'बाघ' - यह तो केदारनाथ सिंह की कविता 'बाघ' पर उनका विचार है। यह आलेख उच्चकोटि का है। उदय जी बताते हैं कि केदारनाथ सिंह की कविता 'बाघ' पर सोचने और कुछ

लिखने का आज सबसे अधिक अनुकूल समय है। उदय जी हर रचनाकारों की रचनाओं और रचनाओं की खासियत पर विशेष जोर देते हैं। भारतीय एवं विदेशी रचनाकारों की रचनाओं को पढते हैं।

उनके निबन्धों की और एक विशेषता है कि उनकी कहानियाँ एवं कविताएँ अपने निबन्धों का विस्तार ही हैं। उनके निबन्ध में उत्तर आधुनिकता, नारी विमर्श, दलित विमर्श, समाज, मनुष्य, राजनीति, भ्रष्टाचार, अर्थ, विज्ञान, गाँव, पर्यावरण, शहर संस्कृतिआदि पर विस्तार से विचार है। इन विचारों को मोल्ड करके उचित प्रतीकों, शैलियों एवं भाषा के ज़रिए अन्य विधाएँ रूपायित होती हैं। इन विधाओं को दोनों हाथों से पाठकों ने स्वीकार किया है।

1.17 फिल्म निर्माता - निर्देशक व पटकथाकार उदय प्रकाश

अपनी कहानी 'हीरालाल का भूत' पर आधारित बनी फिल्म 'उपरान्त' में पटकथा और संवाद लेखन, मिकाइल सार्त्र के नाटक 'लाल घास पर नीले घोडे' के लिए पटकथा लेखन, साहित्य अकादमी के लिए धर्मवीर भारती पर कथाकार विजयदान देथा पर तथा भारतेन्दु हरिश्चन्द्र पर बनाई गई फिल्मों के निर्माता-निर्देशक और पटकथा लेखन, अपनी कहानियों पर आधारित 26 कडियों के धारावाहिक 'पीली छतरीवाली लडकी' में स्किट और स्क्रीनप्ले की भूमिका तथा अपनी लंबी कहानी 'मोहनदास पर' आधारित फिल्म के लिए स्क्रीन प्ले और संवाद लेखन आदि फिल्म के निर्माता-निर्देशक एवं पटकथाकार के रूप में विचारणीय है।

1.18 पुरस्कार एवं सम्मान

साहित्य के क्षेत्र में उदय जी की अनुपम सेवा के लिए उन्हें कई संस्थाओं ने सम्मानित किया है। वे इसप्रकार हैं-

भरत भूषण अग्रवाल पुरस्कार (1980), ओम प्रकाश सम्मान (1984), श्रीकांत वर्मा पुरस्कार (1990), मुक्तिबोध सम्मान, मध्यप्रदेश साहित्य परिषद द्वारा (1996), सदभावना सम्मान (1998), हिन्दी अकादमी द्वारा साहित्यकार सम्मान (1999), पहल सम्मान (2003), रूस का प्रतिष्ठित अंतर्राष्ट्रीय 'पुश्किन सम्मान' (2007), द्विजदेव सम्मान (2008), वनमाली सम्मान (2008), सार्क लिट्रेसी अवार्ड (2009), साहित्य अकादमी पुरस्कार (2010), कृष्णबलदेव वैद सम्मान, अन्तर्राष्ट्रीय पैन अवार्ड, प्रेमचन्द सम्मान (2012)।

1.19 निष्कर्ष

समकालीन साहित्य में उदय प्रकाश की पहचान अलग एवं अनूठा है। समकालीनता की मुख्य विशेषताओं से ओत प्रोत उनकी रचनाएँ बहुलता की संस्कृति को आत्मसात करते हुए मानवीयता की मुखमुद्रा को खडा करती हैं। समय को गहराई से समझनेवाले उदय प्रकाश की रचनाओं का गंभीर अध्ययन एवं विश्लेषण की अनिवार्यता है। आगे के अध्यायों में इसका प्रयास किया जाएगा।